जनवरी, १९४४] # देश-दर्शन [माघ २०००

देश-दर्शन

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ५] मेवाड़-दर्शनांक { संख्या ८
पूर्ण संख्या ५२

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का =)

विषय-सूची

स्थान

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

मेवाड़ या उदयपुर का प्राचीन राज्य राजपूताना के दक्षिण में २३°·४६′ और २५°·२८′ उत्तरी अक्षांशों और ७३°·१′ और ७५°·४६′ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। उत्तर से दक्षिण तक मेवाड़ की अधिक से अधिक लम्बाई २०० मील और पूर्व-पश्चिम में अधिक अधिक चौड़ाई प्रायः सवा सौ मील है। इसका क्षेत्रफल १२६६१ वर्ग मील है। क्षेत्रफल की दृष्टि से उदयपुर राज्य का राजपूताने में पांचवा स्थान है। इस राज्य के उत्तर में अजमेर मेरवाड़ा का ब्रिटिश जिला और शाहपुरा का राज्य है। इसके पश्चिम में जोधपुर और सिरोही के राज्य हैं। दक्षिण-पश्चिम में ईदर है। दक्षिण में डूंगर पुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ राज्य हैं। पूर्व की ओर ग्वालियर राज्य का नीमच जिला, टोंक राज्य का निम्बहेरा और बूंदी ज़िला का राज्य है। उत्तर-पूर्व में देउली छावनी के पास जैपुर राज्य है।

उदयपुर राज्य के प्रायः मध्य में ग्वालियर राज्य का गंगापुर परगना स्थित है इस परगने में १० गांव

हैं। अधिक पूर्व की ओर इन्दौर राज्य का नन्दवास या नन्दवई परगना है जिसमें २९ गांव हैं। दक्षिण-पूर्व की सीमा बड़ी विषम और अनियमित है। इस ओर ग्वालियर, इन्दौर और टोंक राज्य की भूमि जटिल रूप से मेवाड़ राज्य घेरे हुये है। उदयपुर राज्य के कई छोटे छोटे खंड प्रधान राज्य से प्रथक दूसरे राज्यों में बिखरे हुये हैं। उत्तर की ओर मेवाड़ राज्य का एक छोटा टुकड़ा शाहपुरा राज्य में स्थित है। उत्तर-पश्चिम में एक टुकड़ा सोजात के पास जोधपुर राज्य में हैं। एक टुकड़ा दक्षिण-पश्चिम की ओर ईदर में है। दक्षिण-पूर्व की ओर ग्वालियर, इन्दौर और टोंक राज्य में मेवाड़ राज्य के कई छोटे छोटे टुकड़े फैले हुये हैं।

मेवाड़ राज्य को प्रायः उदयपुर राज्य भी कहते हैं। मेवाड़ शब्द संस्कृत के मेड पाट (मेड़ या म्यू) लोगों का देश) का अपभ्रंश है। वास्तव में उदयपुर राजधानी का नाम है जिसे चित्तौड़ के पतन के बाद राना उदय सिंह ने १५५९ ईस्वी में बसाया था।

सूचना

मेवाड़ राज्य के उत्तरी-पूर्वी भाग में खुला हुआ लहरदार (कुछ विषय) सुन्दर पठार है। इसके बीच बीच में कहीं कहीं उसर और पथरीली भूमि है। इनके पास ही अकेली पहाड़ियां बिखरी हुई है। दक्षिणी-पश्चिमी भाग प्रायः पहाड़ियों और घने जंगलों से घिरा हुआ है। अरावली (अर्वली) के समीप का भाग एक दम जंगली और पहाड़ी है। राज्य का दो तिहाई भाग मैदान है। एक तिहाई भाग पहाड़ी और जंगली है।

भारतवर्ष का विशाल जल विभाजक इसे राज्य के मध्य में होकर जाता है। इसके एक ओर का वर्षा जल बंगाल की खाड़ी में बह जाता है। यदि एक रेखा नीमच से उदयपुर नगर और वहां से गोगुंदा के ऊंचे पठार के ऊपर बानास के निकास को और कुम्भलगढ़ के पुराने ऊंचे किले के पास होकर अर्वली पर्वत के भाग से अजमेर तक खींची जावे तो इस रेखा के पश्चिमी भाग का वर्षा जल अरब सागर को और पूर्व का वर्षा जल बंगाल की खाड़ी को बहकर पहुँचेगा। इस पठार की अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्र-तल से २००० फुट

है। उत्तर-पूर्व की ओर यह पठार क्रमशः ढालू है जैसा बानास और बेराच नदियों के मार्ग से स्पष्ट है। दक्षिण की ओर का ढाल सपाट है। इधर असंख्य छोटी छोटी पहाड़ियाँ और तंग घाटियां हैं। इस जंगली प्रदेश को चप्पन कहते हैं।

अरावली या अर्वली पर्वत मेवाड़ की पश्चिमी सीमा पर फैले हुये हैं। मेरवाड़ा में प्रवेश करने पर आरम्भ में इनकी उंचाई समुद्र तल से २३८३ फुट है। पहले इनकी चौड़ाई कुछ ही मील है। यहां से यह दक्षिण-पश्चिम की ओर क्रमशः होते गये हैं। कुम्भलगढ़ के पास इनकी उंचाई ३५६८ फुट है। कुछ अधिक आगे २४°·५८′ अक्षांश और ७३°३७ देशान्तर में इनकी उंचाई ४३१५ फुट है। अधिक दक्षिण में इनकी उंचाई कम हो गई है। लेकिन इनकी चौड़ाई बढ़ गई है। डूंगरपुर की सीमा के पास यह सोमनदी की घाटी तक और बांसवाड़ा की सीमा के पास माही नदी की घाटी तक फैले हुये हैं। यहां इनकी चौड़ाई लगभग ६० मील है। इनके ढाल पर पेड़ और झाड़ियों के जंगल से ढके हैं जहां चीता, भालू, तेंदुआ और दूसरे जंगली जानवर रहते हैं। यहाँ इनके

बन प्रदेश का दृश्य बड़ा ही सुन्दर है। बहुत समय तक अरावली पर्वत मार्ग में बाधा डालते थे। १८६१ और १८६५ के बीच में उनमें होकर पगलिया नाल दर्रे में होकर एक अच्छी सड़क बनाई गई जो दूसरी ओर जोधपुर में देसरी को जाती है। यह सड़क ४ मील लम्बी है। इस दर्रे के अतिरिक्त अरावली में सोमेश्वर नाल, हाथी नाल और सादड़ी दर्रे हैं। हाल में एक रेलवे लाइन अरावली को पार करके उदयपुर नगर से जोधपुर राज्य को गई है। मेवाड़ राज्य के दूसरे भागों की पहाड़ियां बहुत छोटी हैं। दक्षिण-पूर्व में पहाड़ियों की एक श्रेणी बड़ी सादड़ी से जाकम नदी तक चली गई है। चित्तौड़ के पूर्व में छोटी पहाड़ियों की कई श्रेणी हैं। वे एक दूसरे के समानान्तर हैं। इनके बीच में तंग घाटियां घिरी हुई हैं। इनकी औसत ऊंचाई समुद्र तल से १८५० फुट है। दो स्थानों पर इनकी चोटियाँ २००० फुट से कुछ ऊपर हो गई हैं। पूर्वी सीमा के पास पहाड़ियों का समूह है इन्हीं पर मंडलगढ़ का किला बना है। यहीं से मध्यवर्ती बूंदी श्रेणी आरम्भ होती है। उत्तर-पूर्व की ओर एक दूसरी श्रेणी है जो जहाज़पुर तक चली गई है।

नदियाँ—इस राज्य की प्रधान नदी चम्बल और उसकी सहायक बानास है। बराच, कोठारी और खारी छोटी नदियाँ हैं और बानास में मिलती हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर वाकल नदी है। सोम और जाकम नदियाँ दक्षिणी भाग में बहती हैं।

चम्बल का प्राचीन संस्कृत नाम चर्मणावती है। यह मध्यभारत में म्हो छावनी से ९ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर २२°.२७′ उत्तरी अक्षांश और ७५.३१ पूर्वी देशान्तर में निकलती है। १९५ मील उत्तर की ओर बहने के बाद यह मेवाड़ राज्य में धुर पूर्वी सिरे पर चौरासगढ़ के किले के पास प्रवेश करती है। इस स्थान पर इसकी तली समुद्र तल से ११६६ फुट ऊंची है। तली की चौड़ाई १००० गज़ है। इसके आगे यह पठार को काटती हुई बहुत ही टेढ़े मार्ग से आगे बढ़ती है इस ओर यह बहुत संकुचित हो जाती है। राज्य में तीस मील बहने के बाद भैंसरोगढ़ के पास बामनी नदी चम्बल में मिलती है। भैंसरोगढ़ के पास तली की उंचाई १००९ फुट रह जाती है। चौरासगढ़ से भैंसरोगढ़ केवल ३० मील दूर है। इस प्रकार ३० मील में चम्बल

नदी १५७ फुट नीचे उतर आती है। भैंसरोगढ़ से ३ मील ऊपर चम्बल ६० फुट ऊंचा प्रपात (चूलिस) बनाती है। यहाँ सपाट लम्बाकार गुफाओं में विशाल भंवर बन गये हैं। इनकी गहराई तीस-चालीस फुट है। इन भंवरों के नीचे नीचे एक दूसरे से सम्बन्ध है। एक भाग में चम्बल नदी सिकुड़ कर केवल ३ गज़ चौड़ी रह गई है। कुछ ही आगे यह फिर चौथाई मील से अधिक चौड़ी हो गई है। इस प्रदेश का दृश्य बड़ा सुन्दर है। भैंसरोगढ़ से ६ मील उत्तर-पूर्व की ओर बहने के बाद चम्बल उदयपुर राज्य की सीमा के बाहर चली जाती है। इसका शेष भाग बूंदी, कोटा, जैपुर, करौली धौल-पुर और ग्वालियर राज्यों में है। अन्त में यह संयुक्त-प्रान्त में इटावा से २५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर यमुना में मिल जाती है। इसकी समस्त लम्बाई ६५० मील है। लेकिन सीधी रेखा में इसके उद्गम स्थान और यमुना संगम के बीच की दूरी ३३० मील से अधिक नहीं है।

बनास नदी अर्थ है वन की आस या आशा। कहते हैं एक गड़िरिये की सती स्त्री जल में स्नान कर रही

थी। इस एकान्त स्थान में एक कामी ने उसके सतीत्व को नष्ट करना चाहा। उसने अपने सतीत्व की रक्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना की और वह एक नदी के रूप में बदल गई। बनास नदी अरावली पहाड़ियों में कुम्भलगढ़ के किले से ३ मील की दूरी पर निकलती है। गोगुंडा के पठार तक यह दक्षिण की ओर बहती है। यहां से यह पूर्व की ओर मुड़ती है और अरावली की पहाड़ियों को काट कर मैदान में कूद पड़ती है। यहीं इसके दाहिने किनारे पर नाथ द्वारा का प्रसिद्ध वैष्णव मन्दिर है। कुछ दूर आगे यह उदयपुर राज्य और ग्वालियर राज्य के एक बाहरी टुकड़े के बीच में प्रायः एक मील तक सीमा बनाती है। हम्मीरगढ़ के पास इसके ऊपर एक पुल बना है जहाँ होकर बी. बी. एण्ड सी आई रेलवे लाइन जाती है। पूर्व और उत्तर-पूर्व की ओर बहकर बनास मांडल गढ़ की पहाड़ियों के समीप पहुंचती है। यहीं दाहिने किनारे पर बेराच और बायें किनारे पर कोठारीं नदी इसमें मिलती है। इसके आगे पहले यह उत्तर की ओर फिर उत्तर-पूर्व की ओर बहती हुई जहाज़पुर की पहाड़ियों के पश्चिमी सिरे पर पहुंचती है।

जहाज़पुर यहां से केवल ३ मील दूर रह जाता है। देउलो छावनी के पास बनास नदी उदयपुर राज्य को छोड़कर इसकी सीमा के बाहर हो जाती है। इसका शेष भाग अजमेर जिले, जैपुर, बूंदी, टोंक करौली राज्यों में स्थित है। २५.°५५′ उत्तरी अक्षांश और ७६.°४४′ पूर्वी देशान्तर में यह चम्बल में मिल जाती है। इसकी समस्त लम्बाई ३०० मील है। बनास में साल भर पानी नहीं रहता है। गरमी की ऋतु में यह प्रायः सूख जाती है। स्थान स्थान पर केवल गहरे कुंडों में पानी शेष रह जाता है। मेवाड़ राज्य में बनास की तली कड़ी और पथरीली है। इनके नीचे पानी अधिक समय तक रहता है और पड़ोस के किनारों पर कुआं खोदने पर ऊपर निकल आता है।

बनास की सहायक बराच नदी उदयपुर के उत्तर में पहाड़ियों से निकलती है। अहार गांव के पास होने से पहले इस नदी को भी अहार कहते हैं। यह दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। बेडला इसके पास स्थित है। उदयपुर शहर से कुछ ही दूर बहती हुई यह उदय सागर में गिरती है। इससे बाहर निकलने पर इसे उदयसागर

का नाला कहते हैं। कुछ दूर बहने के बाद जब यह खुले भाग में पहुंचती है तब इसे बेराच कहते हैं। इसके आगे चित्तौड़ तक यह पूर्व की ओर बहती है। यहां से यह उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है और मंडलगढ़ के पास बनास में गिर जाती है। यह नदी १२० मील लम्बी है।

कोठारी नदी दक्षिणी मेरवाड़ा में देवैर के पास अरावली की पहाड़ियों से निकलती है। यह पूर्व की ओर बहती है। ६० मील मैदान में बहने के बाद यह बनास में मिल जाती है।

खारी नदी इस राज्य की सब से अधिक उत्तरी नदी है। यह मेरवाड़ा के दक्षिण में निकलती है। यह उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। देवगढ़ के पास बहती हुई यह अजमेर जिले में चली जाती है। देउली छावनी से कुछ मील उत्तर-पश्चिम में यह बनास में मिल जाती है।

बाखल नदी गोगुंडा के पश्चिम में पहाड़ियों से निकलती है। चालीस मील तक यह ठीक दक्षिण की ओर बहती है। ओघना इसी के किनारे स्थित है। मानपुर से यह उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ती है।

कोटरा छावनी तक यह इसी दिशा में बहती है। यहां से यह पश्चिम की ओर मुड़ती है। पांच मील आगे ईदर राज्य में यह साबरमती में मिल जाती है। इसकी तली पथरीली है। इसके किनारे नीचे हैं। वे जंगलों से घिरे हैं।

सोम नदी में राज्य के दक्षिणी-पश्चिमी भाग का पानी आता है। यह विचभेड़ा के पास पहाड़ियो से निकलती है। पहले यह डूंगरपुर तक दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। इसके बाद यह पूर्व की ओर बहती है और डूंगरपुर में जाकम नदी से मिलती है। फि माही नदी में मिल जाती है। इसमें उत्तर की ओर से कुवल, गोमती, सरनी, वेरास और चमला नदियां मिलती हैं।

जाकम नदी दक्षिण-पूर्व में छोटी सादड़ी के पास निकलती है। यह दक्षिण की ओर प्रतापगढ़ राज्य में बहती है। प्रतापगढ़ के उत्तरी भाग को पार करने के बाद यह फिर मेवाड़ राज्य में प्रवेश करती है और दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है। दरियाबाद इसी के किनारे पर स्थित है। अन्त में यह सोम नदी में

मिल जाती है। इस नदी का समस्त मार्ग पहाड़ी चट्टानों और जंगल के बीच में स्थित है। इसका दृश्य बड़ा सुन्दर है।

इस राज्य में कई कृत्रिम ताल हैं जो पहाड़ियों से घिरी हुई छोटी नदियों के मार्ग में बांध बनाने से बनी है। इनमें देबर या जैसमन्द, राजसमन्द, उदयसागर, पिचोला और फतेह सागर प्रमुख हैं।

ढेबर या जयसमन्द (ताल) उदयपुर से ३० मील दक्षिण-पूर्व में समुद्र-तल से ६६६ फुट की ऊंचाई पर पर स्थिति है। उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व तक यह ६ मील लम्बा है। इसकी चौड़ाई एक मील से पांच मील तक है। इसका क्षेत्रफल २१ वर्ग मील है। इसमें ६६० वर्ग मील प्रदेश का वर्षा जल बहकर आता है। इसके पश्चिम ओर की पहाड़ियां ८०० से १००० फुट तक ऊंची हैं। यह संसार की सब से बड़ी कृत्रिम झील है। इसके बीच बीच में पेड़ों से घिरे हुये द्वीप हैं। किनारों पर मछली पकड़ने वालों के छोटे छोटे गांव हैं। यह झील दक्षिणी पश्चिमी कोने पर गोमती नदी में विशाल बांध बनने से बनी है। इस बांध को राना

जय सिंह द्वितीय ने १६८५ और १६६१ ईस्वी के बीच में बनवाया था। उन्हीं की स्मृति में यह जयसमुद्र या जयसमन्द कहलाता है। यह बांध १२५२ फुट लम्बा और ११६ फुट ऊंचा है। तली में इसकी चौड़ाई ७० फुट और चोटी पर १६ फुट है। इसके मध्य में एक सुन्दर मन्दिर बना है। इसके उत्तरी सिरे पर महल बना है। इसके दक्षिणी सिरे पर दरीखाना है जिसमें बारह खम्भे हैं। इन भवनों के बीच में गुम्बददार छः छतरी बनी हैं। पानी के किनारे सूंड़ उठाये हुये हाथियों की पंक्ति बनी है। दक्षिण की ओर की पहाड़ियों पर दो महल बने हैं। छोटे महल से झील का दृश्य अत्यन्त सुन्दर दिखाई देता है। बांध के पीछे लगभग १०० गज़ की दूरी पर एक दूसरी दीवार है। यह दीवार ६२० फुट लम्बी १०० फुट ऊंची है। निचले भाग में इसकी चौड़ाई पैंतीस फुट और चोटी पर इसकी चौड़ाई १२ फुट है। इन दोनों दीवारों के बीच का स्थान मिट्टी से भरा जा रहा है। पश्चिम की ओर कई नहरें निकाली गई हैं जो कुछ गांवों की प्रायः २० वर्ग मील भूमि प्रतिवर्ष सींचती हैं।

राजसमन्द उदयपुर से प्रायः ३६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। कांक्रोली से यह ठीक उत्तर की ओर है। यह तीन मील लम्बा और डेढ़ मील चौड़ा है। इसका क्षेत्रफल ३ वर्ग मील से ऊपर है। इसमें १९५ वर्ग मील भूमि का वर्षा जल बह कर आता है। यह झील भी बांध बनाकर तयार की गई। इस बांध को दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर राना राजसिंह प्रथम ने १६६२ और १६७६ ई० के बीच में बनवाया था। इस बांध को अकाल पीड़ित लोगों की सहायता के लिये प्रजावत्सल राना ने बनवाया था। उस समय संसार के बीच उन्नत से उन्नत किसी देश ने प्रजा को अकाल से बचाने के लिये बांध बनवाने की बात नहीं सोची थी इस प्रकार संसार भर में अकाल पीड़ित लोगों की सहातार्थ बने हुये बांधों में यह बांध सब से पुराना है। इसके बनवाने में एक करोड़ रुपये से अधिक व्यय हुआ। सब भागों को मिलाकर यह बांध लगभग ३ मील लम्बा है। यह पड़ोस के राजनगर के सफेद पत्थर की खानों से निकले हुये पत्थर से बनाया गया है। सामने पानी के तल तक उतरने के लिये पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई हैं।

झील के भीतर सफेद संगमरमर के तीन सुन्दर बुर्ज बने हैं।

उदय सागर उदयपुर से ८ मील पूर्व की ओर है। यह २½ मील लम्बा और डेढ़ मील चौड़ा है। इसका क्षेत्रफल २ वर्ग मील है। इसमें १८५ वर्ग मील प्रवाह प्रदेश का वर्षा जल बहकर इकट्ठा होता है। यह सागर देबारी के दक्षिण में गिरवा या उदयपुर घाटी में दो पहाड़ियों के बीच में बांध बनाने से बना है। बांध की औसत चौड़ाई १८० फुट है। इसे राना उदयसिंह ने १५५६ और १५६५ ई० के बीच में बनवाया था। दोनों सिरों पर मन्दिरों के खंडहर हैं। कहते हैं मुसलमानों ने इन्हें नष्ट कर डाला था। प्रति वर्ष इससे १५०० एकड़ भूमि सींची जाती है।

पिचोला और फतेह सागर राजधानी के पास स्थित हैं।

इनके अतिरिक्त उत्तर और पूर्व की ओर खुले हुये प्रदेश में अनेक ताल बने हुये हैं। प्रायः प्रत्येक गांव में सिंचाई का एक ताल है। पानी कच्ची नालियों से खेतों में जाता है। इससे बहुत सा जल मार्ग में

ही नष्ट हो जाता है और खेतों तक नहीं पहुँचने पाता है।

भूगर्भ

उदयपुर में अधिकतर अरावली से मिलती जुलती शिष्ट (Schist) चट्टानें हैं। उदयपुर शहर के दक्षिण और पूर्व में क्वाट्ज़ पत्थर है जो अलवर और दिल्ली के समीप पाया जाता है। इनमें छोटे छोटे दूसरे पत्थर भी मिले हुये हैं। इन तहों के पूर्व में दानेदार नीस (Gneiss) पत्थर है जिसके ऊपर अरावली और दिल्ली समूह की चट्टाने बिछी हुई हैं। यह चित्तौड़ तक चली गई हैं। चित्तौड़ में इनको शेल, चूने के पत्थर और बलुआ पत्थर ने ढक दिया है। ऊपर बिछे हुये पत्थर निचले विन्ध्याचल के समूह के हैं। अरावली श्रेणी के मध्यवर्ती भाग में शिष्ट के बीच में दानेदार पत्थरों की धारियां हैं। इससे यहां रूपान्तरित शिलायें बन गई है।

रेवार के पास राज्य के प्रायः मध्य में तांबा पाया जाता है। यह दक्षिण में अंजनी और बोराज के पास भी पाया जाता है। जावर के पास शीशे की खाने

हैं। लोहा पूर्व और उत्तर-पूर्व में कई स्थानों में पाया जाता है। भीलवाड़ा जिले में माइका की चट्टानों में गार्नेट (Garnet) पाया जाता है।

उदयपुर राज्य में भूचाल बहुत कम आते हैं। १८८२ के दिसम्बर को जो भूचाल आया वह २ मिनट तक रहा। यह पूर्व की ओर से आया और पश्चिम की ओर चला गया। इस से उदयपुर शहर के घर हिलने लगे एकलिंग जी के पास वाली पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ मन्दिर गिर गया। उत्तर की ओर बारह मील की दूरी तक बड़ी हानि हुई। एक दो बार साधारण भूचाल दूसरे वर्ष में आये।

मेवाड़ राज्य की जलवायु स्वास्थ्यकर है। यहां इतनी गरमी नहीं होती है जितनी उत्तर की ओर राजपूताना के दूसरे राज्यों में पड़ती है। उदयपुर शहर में तापक्रम आदि निरीक्षण करने का कार्य १८६८ ई० से आरम्भ हुआ। जनवरी महीने का औसत तापक्रम ६१ अंश फारेनहाइट और मई का तापक्रम ८६ अंश रहता है। परम तापक्रम १ मई में ११२ अंश तक हो जाता है। एक बार १६०५ में यहां का लघु तापक्रम

३१ अंश हो गया। मेवाड़ राज्य में नियमित रूप से वर्षा होती है। अधिकतर वर्षा अरब सागर की ओर से आनेवाली हवायों के आने पर होती है। कुछ वर्षा बंगाल की खाड़ी की ओर से आनेवाली हवायें भी कर देती है। यदि किसी वर्ष अरब सागर की ओर से आनेवाली दक्षिणी पश्चिमी मानसूनी हवाओं से वर्षा न भी हो, तो बंगाल की खाड़ी की ओर से आनेवाली दक्षिणी पूर्वी मानसूनी हवायें कुछ पानी बरसा देती हैं। इस प्रकार यहां अकाल का अधिक डर नहीं रहता है जैसा राजपूताना से दूसरे राज्यों में होता है। औसत से मेवाड़ राज्य में २४½ इंच वर्षा होती है। इसमें जुलाई और अगस्त महीनों में सात सात इंच और सितम्बर में ५ इंच वर्षा होती है। शेष अन्य महीनों में हो जाती है। किसी किसी वर्ष यहां ४४ इंच से ऊपर वर्षा हो गई है। किसी वर्ष दस इंच से से भी कम पानी बरसा है। राज्य के दक्षिणी-पश्चिमी भागों में अधिक वर्षा होती है। औसत से खेरवाड़ा में २६½ इंच और कोटरा में ३१½ इंच वर्षा होती है। अरावली के मध्य में ३५०० फुट की उंचाई पर स्थित

कुम्भलगढ़ में कोटरा से भी अधिक वर्षा होती है। राज्य के उत्तरी-पूर्वी भागों में कम वर्षा होती है। यहां बाढ़ का बहुत कम डर रहता है। केवल १८७५ में ऐसी भारी वर्षा हुई कि कुछ फसलें नष्ट हो गईं और सरूप सागर का बांध टूटने से बाल बाल बच गया। लेकिन उदयपुर शहर से २ मील की दूरी पर अहार नदी का पुल टूट गया।

बनस्पति

उदयपुर राज्य की प्राकृतिक बनस्पति अजमेर-मेरवाड़ा से समान है। आम, बबूल, बड़, ढाक, खैर, खजूर, खेजरा, महुआ, पीपल, रूजरा के पेड़ बहुत मिलते हैं। बहेरा, धामन, धाव, हल्दू, हिंगोटा, कचनार, कालिया सिरस, सगवान, सालर, सेमल, औरतिमरू के पेड़ भी मिलते हैं। बांस भी बहुत पाया जाता है। छोटी झाड़ियों में आकरा, आंवल, करन्दा, नागदोन, थोर और दूसरी झाड़ियां उल्लेखनीय हैं। वर्षा ऋतु में यहां तरह तरह की घास उग आती है। कई स्थानों में बांस होता है।

पशु—इस राज्य के जंगलों में तेंदुआ बहुत होता है। अरावली के जंगलों में चीता काला भालू, साम्भर, जाकम और दूसरी छाया दार घाटियों में चीतल मिलता है। जंगली सुअर सभी भागों में पाया जाता है। उदयपुर शहर के समीप पिचोला झील के दक्षिणी किनारे पर इनकी रक्षा की जाती है। जंगली कुत्ते और भेड़िया भी राज्य के कुछ भागों में मिलते हैं। खुले प्रदेश में हिरण विचरते हैं। नदियों में महासिर, रोहू आदि मछलियां हैं।

कृषि—मेवाड़ राज्य में कई प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। दक्षिण की ओर पहाड़ियों के पड़ोस वाले मैदानों में काली मिट्टी पाई जाती है। यह बड़ी उपजाऊ होती है। दक्षिण पूर्व में छोटी सादड़ी जिले में प्रायः सब कहीं काली ही मिट्टी है। इसमें कपास बहुत होती है। चित्तौड़ जिले में भी कुछ काली मिट्टी है। लेकिन पहाड़ियां कुछ लाल हैं। पहाड़ियों के ढालों पर विषम भागों में मिट्टी की तह बहुत पतली है। यहां मीलों तक कंकड़ और छोटे छोटे पत्थर बिछे हुये हैं। भूरी मिट्टी बहुत से भागों में मिलती है। नदियों के पड़ोस की बालू मिली हुई हलकी मिट्टी बड़ी उपजाऊ होती है। कंकड़ पत्थर मिली हुई सटी मिट्टी बहुत कम उपजाऊ होती है। मध्यवर्ती भाग में कई तरह की मिट्टी पाई जाती है। इस राज्य के आधे से अधिक मनुष्य खेती के काम में लगे हैं। इस काम में स्त्रियां भी सहायता देती है। जाट और गूजर बड़े मेहनती किसान होते हैं। डांगी, ढाकर गडरी और माली भी अच्छी खेती करते हैं। गांवों में महाजन, ब्राह्मण, कुम्हार, तेली आदि भी खेती करते हैं।

देश दर्शन

इस राज्य में खरीफ और रबी की फसलें होती हैं जिन्हें यहां के लोग सियालू और उनालू कहते हैं। खरीफ की फसल अधिक महत्व की होती है। अधिकतर भाग में खरीफ की फसल उगाई जाती है। निर्धन लोगों का इसी से निर्वाह होता है। यही उनका प्रधान भोजन है। रबी की फसल अधिक मूल्यवान होती है। सरकारी लगान और बनिये का ऋण चुकाने के लिये किसान रबी की फसल का ही सहारा रहता है। पहाड़ी प्रदेश में सियालु (खरीफ) की फसल का अन्न रबी की अपेक्षा प्रायः तिगुना होता है। खुले मैदान में खरीफ की फसल रबी की अपेक्षा प्रायः ड्योढ़ी होती है।

मकई, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, चना इस राज्य के प्रधान अन्न हैं। दक्षिण-पश्चिम के कुछ पहाड़ी भागों में धान भी उगा लिया जाता है।

मकई की फसल वर्षा होते ही सबसे पहले बोई जाती है। इसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। लेकिन इसमें खाद बहुत डाली जाती है। यह राज्य के प्रायः सभी (खेतो के योग्य) भागों में उगाई जाती है।

ज्वार की फसल प्रथम वर्षा के बाद ही बो दी

जाती है। बीच में वर्षा का जल पर्याप्त हो जाता है। इसको अलग से सींचने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। अक्तूबर में फसल काट ली जाती है।

धान दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम के पहाड़ी ढालों पर उगाया जाता है। धान को अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इसलिये यह प्रबल वर्षा के भाग में ही उगाया जाता है।

रबी की फसल में राज्य की सब से अधिक भूमि में जौ बोया जाता है। यह कार्तिक के आरम्भ में बोया जाता है और चैत्र में काटा जाता है।

गेहूँ इस राज्य के उच्च कोटि के लोगों का भोजन है। यह काली में अधिक उगाया जाता है। यहां इसे सींचने की आवश्यकता नहीं होती है। दूसरी भूमि में खाद डालने और तीन चार बार सींचने की आवश्यकता होती है।

चना भी रबी की फसल में इस राज्य का प्रधान अन्न है। कहीं यह अकेला बोया जाता है कहीं यह गेहूँ या जौ के साथ मिलाकर बोया जाता है।

इनके अतिरिक्त यहां तिलहन और पोस्त (अफ़ीम निकालने के लिये) उगाया जाता है।

राज्य की सर्वोत्तम भूमि में ईख उगाई जाती है। राजपूताना के दूसरे राज्यों की अपेक्षा यहां सब से अधिक ईख उगाई जाती है। ईख के खेत में खाद बहुत दी जाती है। इसे सिंचाई की भी बड़ी आवश्यकता होती है। गन्ना जनवरी मास में बोया जाता है और प्रायः दस महीने के बाद नवम्बर में काटा जाता है। इन फसलों के अतिरिक्त राज्य में आम, इमली आदि तरह तरह के फल और तरकारियां उगाई जाती है।

सिंचाई की जो सुविधा इस राज्य में है वह राजपूताना के किसी दूसरे राज्य में नहीं है। अब से ढाई तीन सौ वर्ष पहले ही यहां के प्रजावत्सल राजाओं ने सिंचाई के ऐसे विशाल बांध बनवा दिये जिन्हें देखकर आजकल के इंजीनियर भी दंग रह जाते हैं। कोई कोई बांध अकाल के समय अकाल-पीड़ित लोगों को सहायता देने के लिये बनवाये गये जो उनकी अपूर्व उदारता का प्रमाण है। १०० से ऊपर ताल सिंचाई के काम आते हैं। इनमें जैसमन्द राजसमन्द, उदयसागर फतेहसागर, पिचोला और बारी प्रधान हैं। फिर भी राज्य में सिंचाई अधिकतर कुंओं से होती है। समस्त

राज्य में १ लाख से ऊपर कुये हैं। इस राज्य में कुआ खोदने मे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। ऊपर की मुलायम मिट्टी को खोदने पर कुछ ही फुट की गहराई पर कड़ी पथरीली चट्टानें मिलती हैं जो प्रायः बारूद लगाकर ही तोड़ी जाती हैं। नदियों के दोनों ओर कुये सुगमता से खुद जाते हैं। इनमें शीघ्र ही पानी निकल आता है। इन के खोदने में अधिक खर्च नहीं होता है। पक्का कुआ बनाने में अधिक खर्च होता है। कुओं से ऊपर पानी निकालने का कार्य कहीं रेंहट और कहीं चरस से होता है। कम गहरे कुओं में ढेंकुली से पानी ऊपर निकाला जाता है। ढेंकुली की लकड़ी के एक सिरे पर रस्सी में पानी का बर्तन बंधा रहता है। लकड़ी के दूसरे सिरे पर मिट्टी या पत्थर का बोझ रहता है। इससे बर्तन को रस्सी के सहारे पानी तक ले जाने में ज़ोर लगाना पड़ता है। भरे हुये बर्तन को ऊपर ले आने में कुछ भी कठिनाई नहीं होती है।

वन

मेवाड़ राज्य का एक तिहाई भाग से कुछ अधिक (४६६० वर्ग मील) बन से ढका हुआ है। सब से बड़ा बन प्रदेश अरावली के समीप है। यह त्रिभुजाकार है। इसका सिरा कुम्भलगढ़ के समीप है। इसकी पश्चिमी सीमा जोधपुर और सिरोही के पास है। इस बन की पूर्वी सीमा कुम्भलगढ़ से उदयपुर शहर होती हुई खेरवाड़ा तक चली गई है। ईडर और मेवाड़ के बीच में इस बन का आधार है। इसका क्षेत्रफल २५०० वर्ग मील है। कुछ बन जागीरदारों के हाथ में है। शेष बड़ा भाग सरकारी है। दूसरा बड़ा बन प्रदेश दक्षिण और पूर्व की ओर है। कुछ बन उत्तर-पूर्व की ओर है।

मेवाड़ राज्य खनिज पदार्थों में बड़ा धनी है। उदयपुर शहर से १६ मील दक्षिण की ओर जावर गांव के पास सीसा और जस्ता की खानें हैं। राज्य के मध्य में गंगापुर के समीप तांबे की खाने हैं। पूर्व और उत्तर-पूर्व की ओर पहाड़ियों के समीप लोहा

अधिक है। छोटी मात्रा में लोहा और कई भागों में पाया जाता है। चित्तौड़ से १२ मील उत्तर की ओर लोहे के समीप स्लेट की पांच छः फुट मोटी तहें पाई जाती हैं। घर बनाने का पत्थर धेबर झील के चारों ओर और देबारी में बहुत पाया जाता है। उदयपुर शहर के समीप चूने का पत्थर कुछ नीले रंग का है। भीलवाड़ा जिले में मूल्यवान पत्थर मिलता है।

संक्षिप्त इतिहास

राजपूताने भर में सर्व श्रेष्ट राजपूत है उदयपुर के महाराना इनकी उत्पत्ति श्री रामचन्द जी के पुत्र कुश से हुई है। रानाओं ने ही समस्त भारत का सिर ऊंचा रक्खा। रानाओं ने अपनी लड़की किसी मुसलमान बादशाह को नहीं व्याही। जिन राजपूतों ने अपनी लड़कियां मुसलमान बादशाहों को व्याही उनसे भी उन्होंने खान-पान और विवाह सम्बन्ध तोड़ दिया। सुमित्र कुश का अन्तिम वंशज था जिसने अवध पर राज्य किया। ईसा से ५७ वर्ष पूर्व विक्रमा दित्य का समकालीन था। कई पीढ़ियों के बाद इस वंश का राजा कनकसेन पश्चिम की ओर आया। उसने वल्लभि राज्य स्थापित किया। यहां उसके वंशजों ने १६ पीढ़ी तक राज्य किया। इस बंश के अन्तिम राजा शिलादित्य को उत्तर से आनेवाले असभ्य आक्रमणकारियों ने मार डाला छठी शताब्दी के मध्य में वल्लभि राजवंश का एक सदस्य मेवाड़ के दक्षिण-पश्चिम की ओर ईडर में बस गया। उसका नाम गोहादित्य या गोहिल था। इसी से उसके वंशज गोहलोट या गहलोट कहलाते हैं। उसे शिकार से बड़ा प्रेम था। उसने यहां

के निवासी भीलों के प्रति ऐसी सहानुभूति दिखलाई और आखेट में ऐसी वीरता प्रगट की कि भीलों ने उसे अपना राजा चुना। एक भील ने अपनी अंगुली काटकर अपने रुधिर से उसके मस्तक पर टीका लगाया। राज्याभिषेक यह प्रथा (जिसमें भील की अंगुली के रुधिर का टीका राजा के मस्तक पर लगाया जाता था) चौदहवीं शताब्दी तक जारी रही। गोहादित्य के बाद भोगादित्य या भोज राजा हुआ। फिर महेन्द्र जी प्रथम नागादित्य, शिलादित्य क्रमशः राजा हुये। शिला के नाम का एक शिला लेख ६४६ ई० का मिला है। अपराजि का उल्लेख ६६१ ई० के एक शिला लेख में आया है। इसके बाद महेन्द्र जी द्वितीय और काल भोज राजा हुये। उसकी राजधानी वर्तमान उदयपुर शहर से १२ मील उत्तर की ओर नागदा में थी। कुछ समय के बाद वह चित्तौड़ को चला आया। यहां मोरी या मौर्य राजवंश के राजपूत राजा मानसिंह राज्य करते थे। कहते हैं इस वीर राजपूत ने सिन्ध पर आक्रमण करने वाले मुसलमानों को हराया फिर ७३४ ई० में मानसिंह को भगाकर चित्तौड़ पर अधिकार

कर लिया। उसने रावल की उपाधि धारण की। बापा ने अपना राज्य पूर्व की ओर बहुत बढ़ा लिया। ७५ ईस्वी में उसका देहान्त हो गया। चौदहवीं शताब्दी तक यहां कई राजा हुये। लेकिन इस समय के इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। ९७७ ईस्वी के एक शिला लेख में (जो ऐत या अहार में मिला) १२ राजाओं के नाम आये हैं। दूसरी सूची में तेरह नाम आये हैं। एकलिंग माहात्म्य के अनुसार कर्णसिंह के पश्चात् मेवाड़ का राजवंश दो शाखाओं में बट गया। एक राजवंश रावल और दूसरा राना कहलाने लगा।

जब राना लक्ष्मण सिंह पश्चिमीय पर्वतों के संसोदा गांव में शासन करते थे। अतः उसके वंशज सेसोदिया कहलाने लगे। जब १३०३ ईस्वी में अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की तो राना लक्ष्मण सिंह अपने सम्बन्धी रावल रत्न सिंह की महायता के लिये आये। औरगढ़ की रक्षा करते करते वीर गति को प्राप्त हुये। चित्तौड़ का घेरा छः महीने तक चला। इसमें रत्न सिंह भी मारे गये। उनके परिवार के जो लोग निकल सके

वे दक्षिण की ओर बागर के जंगलों में चले आये यहां उन्होंने एक अलग राज्य स्थापित किया जो इस समय डूंगरपुर और बांसवाड़ा दो राज्यों में बट गया है। यहां के राजा महारावल कहलाने लगे। आठ लड़कों में अजय सिंह को छोड़कर लक्ष्मण सिंह को शेष सब लड़के चित्तौड़ के घेरे में मारे गये। अजय सिंह अरावली के मध्य में केलवाड़ा को चले गये और वहीं पहाड़ी भाग में राना के नाम से राज्य करने लगे।

१३०३ ई० के अगस्त मास में चित्तौड़ गढ़ पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। ३०,००० हिन्दुओं के कत्ल करने के बाद अलाउद्दीन ने अपने बेटे खिज़र खां को चित्तौड़ का सूबेदार बनाया। मुहम्मद तुगलक के समय तक यहां मुसलमानों का ही राज्य रहा। मुहम्मद तुगलक ने जालोर (जोधपुर) के सोंगर सरदार को चित्तौड़ का सूबेदार बनाया। अजयसिंह अपने जीवन में चित्तौड़ को न ले सका। उसके मरने पर उसका भतीजा हम्मीर सिंह प्रथम राना हुआ। उसने चित्तौड़ लेने की तयारी की। उसने मालदेव

की लड़की से विवाह किया। इससे उसका कार्य और कुछ सुगम हो गया। कुछ ही समय में हम्मीर सिंह ने चित्तौड़ गढ़ पर अधिकार कर लिया। लेकिन इससे मुहम्मद तुगलक बड़ा रुष्ट हुआ। वह एक बड़ी सेना लेकर चित्तौड़ पर फिर चढ़ आया। लेकिन उसकी हार हुई। सिंगोली में वह कैद कर लिया गया। ५० लाख रुपये १०० हाथी और कई जिले देने पर वह छोड़ दिया गया।

हम्मीर सिंह ने धीरे धीरे खोये हुये जिले फिर ले लिये। १३६४ में उसकी मृत्यु हो गई। हम्मीर का बेटा खेत सिंह और भी अधिक सफल विजेता हुआ। उसने ळिल्ला पठान से अजमेर और जहाजपुर जीत लिया। डटा ने मंडल गढ़ और दक्षिण-पूर्व की ओर का जंगली पहाड़ी प्रदेश भी जीत लिया।

बकरोल के पास उसने दिल्ली के मुसलमानों को हराया। १३८३ में उसकी मृत्यु हो गई। राना लक्ष सिंह या लाखा के समय (१३८२-९७) में जावर में चाँदी और सीसे की खानों का पता लगा। इनकी

आय से मन्दिर, महल, सिंचाई के बांध और ताल, बनवाये गये।

लाखा राना के कई बेटे थे। सब से बड़ा बेटा चान्दा था। इस समय एक विचित्र घटना हुई जो इतिहास में अपूर्व है। मन्दोर के राठोर राव ने चान्दा से अपनी कन्या का विवाह करने के लिये दूत भेजा। दैव योग से वह उस समय वहां उपस्थित न था। वृद्ध राना ने हंसी में कहा कि यह मुझ जैसे वृद्ध के लिये थोड़े ही होगा। यह बात राठोर नरेश को बुरी लगी। अन्त में वृद्ध राना इस शर्त पर विवाह करने को राज़ी हो गये कि इस विवाह से जो सन्तान हो वही राजा हो। चान्दा ने अपूर्व त्याग और पितृ भक्ति दिखलाई। उसने सहर्ष राजसिंहासन का अपना अधिकार त्याग दिया। चान्दा और उसके वंशजों को प्रधान-मन्त्री बनने का अधिकार मिला। यह अधिकार १८६८ ई० तक अविछिन्न रहा। १८१८ में ब्रिटिश सरकार ने इस अधिकार के लिये अपनी स्वीकृत न दी।

१३९७ में नये विवाह का पुत्र मोकल राजा हुआ। चन्दा की सम्मति राज्य कार्य भली भांति

चलने लगा। लेकिन मोकल की माता को चन्दा का प्रभाव अच्छा नहीं लगता था। अतः उसने अपने मोकल की सहायता के लिये अपने भाई रनमल राठोर को बुला लिया। चन्दा मांडू को चला गया इसके बाद राठोरों का हस्तक्षेप बढ़ता ही गया। कुछ ही समय के पश्चात नागौर के फीरोज़ खां ने मेवाड़ पर आक्रमण किया। लेकिन उसकी हार हुई। और वह मार डाला गया। १४३३ में रानामोकल मार डाला गया। उसका बेटा कुम्भ जिसकी अवस्था बहुत कम थी राना हुआ। राठोरों का हस्तक्षेप लोगों को अच्छा नहीं लगता है। जब रनमल ने कुम्भ के चचा रघुदेव को मरवा डाला तब सब लोग राठोरों से रुष्ट हो गये। उन्होंने चन्दा से सहायता के लिये प्रार्थना की। चन्दा ने मांडू से आकर राठोरों के हस्तक्षेप का अन्त कर दिया। राना कुम्भ को शासन काल असाधारण कठिनाइयों में बीता।

मालवा और गुजरात के मुसलमान बादशाह मिलकर मेवाड़ पर आक्रमण करने लगे। मालवा के बादशाह महमूद खिलजी को उसने हराकर पकड़ लिया

और चित्तौड़ में छः महीने तक उसे बन्दी रक्खा। इस विजय और दूसरी विजयों की स्मृति में उसने विजय स्तम्भ बनवाया। उसने गुजरात के कुतुबुद्दीन और नागौर (मारवाड़) के मुसलमान सूबेदार को भी हराया। वीर योधा होते हुये राना कुम्भ कवि और संगीत प्रेमी था। संगीत शास्त्रों पर उसने चार पस्तकें लिखी हैं। उसने कई मन्दिर और गढ़ बन वाये। इनमें कुम्भलगढ़ सर्व प्रधान है। १४६८ में उसके बड़े बेटे उदयकरन ने इस वीर राना की हत्या कर डाली। उदयकरन ने पांच वर्ष तक राज्य किया। उसे कोई नहीं चाहता था। उसके छोटे भाई ने उसे भगा दिया। भागते समय उस पर विजली गिरी और वह मर गया। १४७३ में रायमल्ल राना हुआ। १५०८ तक उसने राज्य किया।

इस समय मालवा के गयासुद्दीन ने मेवाड़ पर चढ़ाई की। लेकिन मंडलगढ़ में उसकी हार हुई। राना के बड़े बेटे पृथिवी राज ने गुजरात के मुजफ्फर शाह को कैद कर लिया और बड़ा धन हरजाने के रूप में पाने पर ही उसे छोड़ा। पृथिवी राज अपने पिता के

ही जीवनकाल में मर गया। संग्राम सिंह या राना सांगा मेवाड़ का राना हुआ। संग्राम सिंह के शासन काल में मेवाड़ उन्नति के शिखर पर पहुँच गया। उसके समय में मेवाड़ की वार्षिक आय १० करोड़ रुपया हो गई थी। उस समय का राज्य उत्तर में बियाना पूर्व में यमुना की सहायक सिन्ध नदी, दक्षिण में मालवा, और पश्चिम में अरावली पर्वत तक फैला हुआ था। युद्ध क्षेत्र में राना सांगा के पीछे ८०,००० घुड़ सवार, सात बड़े राजा ९ राव और १०४ रावल या रावत और ५०० लड़ाका हाथी चला करते थे। मारवाड़ और अम्बर के राजा उसका अभिवादन करते थे। ग्वालियर, अजमेर, सीकरी, रायसेन, काल्पी, चन्देली, बूंदी, गागरावे, रामपुर और आबू के राजा उसे कर देते थे और उसकी सेवा किया करते थे। बाबर से लड़ने के पूर्व वह १८ घमासान लड़ाइयों में दिल्ली और मालवा के बादशाहों को हराकर विजय प्राप्त कर चुका था। दो लड़ाइयों में दिल्ली का बादशाह इब्राहीमलोदी सेना पति था। इनमें भी संग्राम सिंह की ही विजय हुई थी। एक बार उसने १५१९ में

मालवा के बादशाह महमूद द्वितीय को युद्ध में हराकर बन्दी कर लिया था और बिना हरजाना लिये ही उसे निर्युक्त कर दिया था। इस उदारता की प्रशंसा मुसलमान इतिहास लेखकों ने भी की है। रण थम्भोर और खांधार के दुर्गों को जीतने से उसने बड़ी ख्याति प्राप्त कर ली थी।

बाबर ने इब्राहीम को हराने के बाद राना से मोरचा लेने की तयारी की पहले मुठभेड़ बियाना के पास १५२७ के फर्वरी मास में हुई। इस मुठ भेड़ में राजपूतों ने मुगलों की अग्रिम टोली को बुरी तरह हराया। कुछ दिन बाद अब्दुल अज़ीज की अध्यक्षता में मुगलों की दूसरी टोली काट कर टुकड़े टुकड़े करदी गई। इन समाचारों से बाबर और उसके सिपाही डरने लगे। इसी समय बाबर ने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की और सोने चांदी के प्यालों को तोड़कर निर्धनों को बांट दिया। फिर उसने अपने सिपाहियों को इकट्ठा करके उन्हें धार्मिक जोश दिलाया और उनसे कुरान की शपथ ली कि वे युद्ध में पीठ नहीं दिखायेंगे भरतपुर राज्य खनुआ नामी स्थान में १५२७ ईस्वी

के १२ मार्च को भीषण युद्ध हुआ। राजपूत वीरता से लड़े। कहते हैं इसी बीच में रायसेन (भोपाल) का तोवर राजा ३५००० घुड़सवारों के साथ राजपूतों को छोड़कर बाबर से जा मिला। इससे युद्ध का पासा पलट गया। राजपूतों की हार हुई। राना सांगा बुरी तरह घायल हुआ। वीर राजपूत प्राणों से भी अधिक प्यारे अपने राजा को युद्ध क्षेत्र से जैपुर राज्य के बसवा स्थान को ले गये। वहीं उसी वर्ष उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय इस वीर योधा के शरीर का कुछ ही भाग शेष रह गया था। उसकी एक आंख और एक बांह युद्ध में चली गई थी। तोप के गोले से उसकी एक टांग भी उड़ गई थी। युद्ध में भिन्न भिन्न अवसरों पर उसके शरीर पर तलवार या भाले के ८० घाव लग चुके थे।

१५२७ में राना संग्रामसिंह के मरने पर उसका बेटा रत्नसिंह द्वितीय राना हुआ। चार वर्ष बाद बूंदी के राव सूरज और राना रत्नसिंह आपस में लड़ते लड़ते दोनो एक दूसरे के हाथ से मारे गये। राना सांगा का छोटा बेटा विक्रमादित्य गद्दी पर बैठा। उसने

पहलवानों को प्रोत्साहन दिया और उच्च वंश के सरदारों को रुष्ट कर दिया इस अवसर से गुजरात के राजा बहादुर शाह ने लाभ उठाया। १५३४ में उसने मेवाड़ पर चढ़ाई की और चित्तौड़ को ले लिया। राजमाता स्वयं सेना का नेतृत्व कर रही थी। वह लड़ते लड़ते वीर गति को प्राप्त हुई। दूसरी राजपूत ललनायें जलती चिता में कूद कर भस्म हो गई। राजपूत सिपाही लड़ते लड़ते वीरगति को प्राप्त हुये। ३२००० से अधिक राजपूत सिपाही लड़ते हुये मारे गये। चित्तौड़ पतन का समाचार सुनकर हुमायूं ने बहादुर शाह पर चढ़ाई की और मन्दसौर के पास उसे हरा दिया। इस से चित्तौड़ फिर विक्रमादित्य के हाथ आ गया। लेकिन राजपूत सरदारों के प्रति उसका बर्ताव फिर भी न सुधरा। १५३५ में राना संग्रामसिंह के भतीजे बनवीर ने उसे मार डाला। बनवीर ने २ वर्ष तक राज्य किया। १५३७ में उदयसिंह राना हुआ। उसने १५७२ ईस्वी तक राज्य किया। १५५६ में उसने उदयपुर शहर बसाया। १५६७ में चित्तौड़ को तीसरी बार मुसलमानी सेनाओं ने अकबर के

आधिपत्य में घेर लिया। राना गुजरात की पहाड़ियों में चला गया। फिर भी जयमल और दूसरे राजपूतों ने अपने प्राणों की आहुति देकर अन्त तक लड़ते रहे। अन्त में सुरंग लगाकर किले की दीवार में दो स्थानों पर छेद कर दिये गये। इन पर राजपूत इतनी वीरता से लड़े कि मुगल सिपाही डर कर पीछे भाग गये रात्रि में जयमल टूटे भाग की मरम्मत करवा रहा था। इसी समय अकबर ने गोली छोड़ी जिससे जय मल घायल हो गया। जयमल ने इतनी दूर की चोट से प्राण त्यागना वीरोचित न समझा। दूसरे दिन वह फिर युद्ध क्षेत्र में गया और लड़ते हुये वीर गति को प्राप्त हुआ। पर मुट्ठी भर राज पूत मुगलों की अपार सेना को न हटा सके अन्त में ३०,००० से ऊपर राजपूत वीर सिपाही लड़ते हुये मारे गये और खाली किले पर अकबर का अधिकार हो गया। किले की राजपूत स्त्रियां पहले ही चिता में भस्म हो चुकी थीं। जयमल पट्टा की वीरता से प्रसन्न होकर अकबर ने इन वीरों की मूर्तियों को दिल्ली के किले के द्वार पर पत्थर के हाथियों पर स्थापित कराया। आगे चलकर औरंग-

जेब ने इन्हें हटवा दिया। १८६३ में यह मूर्तियां फिर गड़ी मिलीं। इस समय वह दिल्ली के अजायब घर में रक्खी हुई हैं।

चित्तौड़ के पतन के बाद उदयसिंह फिर मेवाड़ को लौटा। १५७२ ई० में गोगुंडा के पास उसका देहान्त हुआ। उसका बड़ा बेटा राना प्रताप सिंह गद्दी पर बैठा। वीर और त्यागी प्रताप को चित्तौड़ को लिये बिना कैसे चैन आ सकता था। उसको अपने पूर्वजों के राज्य और गौरव को बढ़ाने की लगन थी। उसने अपने शक्तिशाली शत्रुओं से शीघ्र ही युद्ध छेड़ दिया। पर इस बार उसे न केवल मुसलमानों से लड़ना पड़ा वरन उसके स्वजातीय मारवाड़, बीकानेर और बूंदी के राजा भी मुसलमानों का पक्ष लेकर प्रताप से लड़ने के लिये आये थे। पर प्रताप के जितना बड़ा संकट था उससे भी कहीं अधिक बड़ा उसमें साहस और उत्साह था। शत्रु की सेनाओं के मार्ग में बाधा डालने के लिये उसने मेवाड़ के मैदानों को उजाड़ दिया और पहाड़ियों में शरण ली। राना को दबाने के लिये अक-बर ने जैपुर के राजा भगवानदास के बेटे, मानसिंह

को बड़ी सेना के साथ मेवाड़ को भेजा। गोगुंदा के पास हल्दी घाटी में भयानक युद्ध हुआ। मुगल सेना के पैर उखड़ गये। उसकी सहायता के लिये दूसरी सेना आ गई। फिर भी वह पहाड़ियों पर अपना अधिकार न जमा सकी। इस युद्ध में राना भी तीर और भाले से घायल हो गया था। दो वर्ष के बाद शाहबाज़खां, भगवानदास और मानसिंह शाही सेना लेकर फिर मेवाड़ पर चढ़ आये। इस बार उन्होंने कुम्भलगढ़ और गोगुंडा को छीन लिया और मेवाड़ राज्य के कुछ भाग उजाड़ दिये। वर्षों लड़ते-लड़ते प्रताप की सेना नष्ट हो चुकी थी खजाना खाली हो गया था। उसके राज्य को शत्रुओं ने चारों ओर से घेर लिया था। अतः प्रताप ने एक बार अपने पूर्वजों की वीर भूमि को छोड़ कर सिन्धु नदी के किनारे जाकर रहने की सोची। इसी बीच में उसके योग्य मन्त्री भीम साह ने अपनी समस्त संचित सम्पत्ति प्रताप को युद्ध चलाने के लिये सौंप दी। इस धन से प्रातः स्मरणीय प्रताप ने नई सेना का संगठन किया। मेवाड़ के दक्षिण की ओर देवैर स्थान पर उसने शाही सेना को काट कर टुकड़े टुकड़े कर

दिया। दूसरे स्थानों में भी उसने मुगल सेना को दम न लेने दिया। कुछ ही समय में प्रताप ने अपना समस्त राज्य फिर जीत लिया इसके बाद मुगल सेना को फिर कभी साहस न हुआ कि प्रताप से मोर्चा ले। अपने मरने के समय (१५९७) तक प्रताप का यहां पूरा अधिकार रहा। पर चित्तौड़ पर शत्रुओं का अधिकार होने से प्रताप का कार्य पूरा नहीं हो पाया था अतः अपनी मृत्यु शय्या पर पड़े हुये प्रताप ने अपने वीर राजपूतों से प्रतिज्ञा करवाई कि जब तक चित्तौड़ न जीत लेंगे तब तक उदयपुर में महल न बनवायेंगे। इस प्रतिज्ञा के लेने पर प्रताप ने अपना शरीर तो त्याग दिया। साधारण विपत्तियों से घबराने वालों के लिये प्रताप का जीवन एक ज्वलन्त आदर्श है। उसकी कीर्ति भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगी।

प्रताप की मृत्यु के बाद उसका बड़ा बेटा अमरसिंह प्रथम राना हुआ। अकबर के मरने के बाद जहांगीर ने मेवाड़ को जीतने का निश्चय किया। मेवाड़ के राजपूतों में फूट डालने के लिये उसने प्रताप के भाई सगर (जो अकबर से जा मिला था) को चित्तौड़

का राना बनाया। फिर उसने अपने बेटे परवेज़ के साथ एक बड़ी सेना मेवाड़ जीतने के लिये भेजो। लेकिन उंटाला के पास शाही सेना बुरी तरह से हारी। महावत खां, अब्दुल्ला और दूसरे अमोरों के साथ नई नई सेनायें मेवाड़ को भेजी गईं। लेकिन अमर सिंह के वीर राजपूतों ने इन सब को पराजित किया। १६१३ ईस्वी में सेना का स्वयं संचालन करने के लिये अजमेर आया। कुर्रम (शाहजहां) की सेना ने मेवाड़ को लूट लिया। राना पहाड़ियों में चला गया। आगे चलकर इस शर्त पर सन्धि हो गई कि राना स्वयं न जाकर अपने बेटे को ही शाही दरबार में भेज दें। अमर सिंह का बेटा करन सिंह खुर्रम के साथ अजमेर को गया। वहां जहांगीर ने उसका बड़ा सत्कार किया। कुछ ही समय में शाही सेनायें मेवाड़ छोड़कर दिल्ली लौट गईं। चित्तौड़ में मेवाड़ के राना का अधिकार होगया। करन सिंह को प्रसन्न करने के लिये प्रतिदिन उसे तरह तरह की भेंटे दी जाती थीं। जहांगीर उसे अपने रनिवास में ले गया। नूरजहां ने उसे मूल्यवान खिलत, सुसज्जित हाथी, घोड़ा और तलवार आदि भेंट की।

१६१५ में करनसिंह मेवाड़ लौटा। लौटने के समय तक ११० घोड़ों पांच हाथियों (जो शाहजहां ने करन सिंह को दिये थे) के अतिरिक्त करन सिंह को १० लाख से अधिक मूल्य की वस्तुयें करन सिंह को भेंट में दी जा चुकी थी। १६२० में अमरसिंह का स्वर्गवास हो गया। स्वाभिमानी राना ने १६१६ से ही राज सिंहासन अपने बेटे के पक्ष में त्याग दिया था। करन सिंह द्वितीय ने १६२८ तक राज्य किया। उसने करन सिंह ने उदयपुर के पिचोला ताल में स्थित द्वीप पर राजमहल का आरम्भ किया। १६२८ में राना जगत-सिंह प्रथम गद्दी पर बैठा। जगत सिंह ने १६५२ ईस्वी तक राज्य किया। उसके समय में मेवाड़ में शान्ति रही। उसने पिचोला ताल के महल को पूरा किया। जो उसकी स्मृति में जग मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। अपने पिता से विद्रोह करते समय खुर्रम ने यहीं शरण ली थी। जगत सिंह ने उदयपुर में जगन्नाथ राय जी का मन्दिर बनवाया और चित्तौड़ की किले बन्दी पूरी की। राना राजसिंह प्रथम ने १६५२ से १६८० तक राज्य किया। उसने गद्दी पर बैठते ही जैपुर के माल-

पुरा को लूटा। फिर उसने मुगल साम्राज्य के कुछ अन्य नगरों को लुटा। लेकिन जब शाही सेना चित्तौड़ के पड़ोस की भूमि को लूटने लगी तो उसने अपने बेटे के हाथ से क्षमा याचना का पत्र शाहजहां के दरबार में भेज दिया। १६६२ में मेवाड़ में भीषण अकाल पड़ा। अकाल पीड़ित प्रजा को सहायता देने के लिये कांकरोली के पास झील का बांध बनवाया। यह उसकी स्मृति में राजसमन्द कहलाता है। जब औरंगज़ेब ने हिन्दुओं पर जज़िया का कर लगाया तब राना ने उच्च भावों से प्रेरित होकर औरंगज़ेब को एक आदर्श पत्र इसके विरोध में भेजा। औरंगजेब ने रुष्ट होकर एक विशाल सेना मेवाड़ को भेजी। इस सेना ने चित्तौड़ मंडल गढ़, उदयपुर और दूसरे स्थानों के मन्दिरों और मूर्तियों को नष्ट किया। लेकिन युद्ध में कई बार गोगुंदा और चित्तौड़ के शाही सेना को हार खानी पड़ी। इसी समय १६८० में राजसिंह का स्वर्गवास हो गया। दूसरे वर्ष उसका बेटा जैसिंह द्वितीय गद्दी पर बैठा। नये राना और औरंगज़ेब में सन्धि हो गई। जज़िया लगाना बन्द कर दिया गया है।

राना जैसिंह ने १६६८ ईस्वी तक राज्य किया। उसने ढेबर झील में बांध बनवाया जो उसकी स्मृति में जैसमन्द नाम से प्रसिद्ध है। सेना जैसिंह के बेटे अमर सिंह ने १७१० ई० तक राज्य किया। जब जोधपुर और जैपुर के महाराजाओं ने अपनी लड़कियों को मुगलबादशाहों से ब्याहा तब उदयपुर के रानाओं ने इनसे विवाह सम्बन्ध तोड़ दिया था। इन राजाओं को उदयपुर के राजवंश में अपनी कन्या का विवाह करने का अधिकार राना ने इस शर्त पर दे दिया कि वे सब मिलकर एक दूसरे की रक्षा करें और मुगल बादशाहों से लड़ने के लिये तयार रहें। पर दुर्भाग्य से १७१० में उसकी मृत्यु हो गई। उसका बेटा संग्राम-सिंह द्वितीय राना हुआ। बहादुरशाह ने मेवाड़पुर के और मांडल के परगने मे वाती रामबाज़ खां को दे दिये। वह एक बड़ी सेना के साथ इन परगनों पर अधिकार करने के लिये आया, लेकिन राना संग्राम सिंह की सेना ने हुर्रा के पास उसे हराया और मार डाला। फर्रुखसियर के समय में मित्र (मेवाड़, जोधपुर और जैपुर) राजाओं ने मिलकर मुगल अफसरों को अपने

अपने राज्यों से निकालना आरम्भ किया। उन्होंने उन मस्जिदों को भी गिरा दिया जो प्राचीन मन्दिरों के स्थानों पर बनाई गई थीं। इसके कुछ समय बाद राना और दिल्ली के बादशाह से सन्धि हुई। १७३४ में संग्राम सिंह की मृत्यु हो गई। जगतसिंह द्वितीय गद्दी पर बैठा। जगत सिंह के शासनकाल (१७३४-५१) में मुगल साम्राज्य जर्जर हो गया। लेकिन मरहठों की शक्ति बढ़ गई। दिल्ली के बादशाह ने मरहठों को सारे मुगल राज्य में चौथ वसूल करने का अधिकार दे दिया था इसी सन्धि के अनुसार मरहठों ने मेवाड़ से भी चौथ मांगी। राना ने १,६०,००० रु० वार्षिक चौथ मरहठों को देना स्वीकार कर लिया और पेशवा बाजीराव से सन्धि हो गई। कुछ समय बाद राजगद्दी के सम्बन्ध में जैपुर और मेवाड़ में फूट फैली। राना ने मल्हारराव होल्कर से सहायता मांगी। अतः १७४३ में मेवाड़ का रामपुर का उपजाऊ जिला होल्कर को मिल गया। आगे चलकर मरहठों की शक्ति और अधिक बढ़ गई। जगत सिंह द्वितीय ने १७५१ से १७५४ तक राज्य किया। फिर राजसिंह द्वितीय

(१७५४ से १७६१ तक) अरिसिंह द्वितीय (१७६१ से १७७३ तक) हमीर सिंह द्वितीय (१७७३ से १७७८) तक) मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। अरिसिंह के समय में होल्कर की सेनायें उदयपुर के पास तक आ गईं। ५१ लाख रुपया देकर होल्कर की सेना को विदा किया गया। १७६४ में यहां भीषण अकाल पड़ा। उदयपुर के राजपूत सरदार राना अरिसिंह से असन्तुष्ट थे। उसे गद्दी से उतारने के लिये उन्होंने सिन्धिया से सहायता मांगी। १७६९ में सिन्धिया ने अरिसिंह को उज्जैन के पास हरा दिया और उदयपुर को घेर लिया। ६३ लाख रुपया लेकर सिन्धिया ने सन्धि कर ली। प्रायः आधा रुपया हीरा जवाहिरात, सोने और चांदी के रूप में दिया गया। शेष धन को चुकाने के लिये जावद, जीरन और नीमच के जिले रिहन कर दिये गये। मन्दोर का प्रान्त कुछ समय के लिये जोधपुर नरेश को सौंपा गया। १७७१ में जोधपुर के राजा ने इसे लौटालने से इनकार किया और यह प्रान्त सदा के लिये मेवाड़ राज्य से निकल गया। १७७३ में राना अरि-सिंह को बूंदी के महाराव राजा अजीतसिंह ने मार डाला। इससे दो राज्यों में अनबन हो गई।

१७७८ में राना हम्मीर सिंह की मृत्यु हो गई १७७८ से १८२८ तक राना भीम सिंह ने राज्य किया। इस समय उदयपुर के राजपूत सरदारों में गृह कलह फैल गई थी। इससे सिन्धिया और होलकर की सेनाओं का यहां अधिकाधिक हस्तक्षेप होने लगा। अमीर खां और दूसरे पिंडारियों की लूट मार की सीमा न रही। जागीरदारों ने राना को कर देना बन्द कर दिया। राना की आर्थिक दशा शोचनीय हो गई। इसी समय राना की लड़की कृष्ण कुमारी से विवाह करने के लिये जैपुर और जोधपुर के राजाओं में युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध का अन्त करने के लिये अभागी राजकुमारी ने विष खाकर अपने शरीर का ही अन्त कर लिया।

मरहठों को हराने के बाद १८१७ में ब्रिटिश सरकार ने राजपूताना के राज्यों में अपना प्रभुत्व बढ़ाने का निश्चय किया। १३ जनवरी १८१८ को ब्रिटिश सरकार ने मेवाड़ राज्य से सन्धि की। ब्रिटिश सरकार ने उदयपुर राज्य की रक्षा करने और राज्य के छीने हुये भागों को लौटलवाने का वचन दिया। इसके बदले में

उदयपुर राज्य ने ब्रिटिश सरकार का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। मेवाड़ राज्य ने यह भी मान लिया कि वह दूसरे राज्यों से राजनैतिक पत्र व्यवहार न करे और झगड़ा होने पर ब्रिटिश सरकार का निर्णय मान लेगा। पांच वर्ष तक राज्य की आय का एक चौथाई भाग फिर ३/८ सदा के लिये देना स्वीकार कर लिया। १८४६ में यह कर २ लाख रुपया वार्षिक नियत कर दिया गया।

टाड राजस्थान के रचयिता केप्टेन (लफ्टेनेंट कर्नल) जेमस टाड उदयपुर के प्रथम पोलिटिकल एजेंट नियुक्त हुये। राज्य की आय बढ़ाने के लिये आरम्भ में ब्रिटिश हस्तक्षेप अधिक रहा। ३१ मार्च १८२८ को राना भीमसिंह का देहान्त हो गया। उसका बेटा जवान सिंह राना हुआ। उसका समय भोग विलास में अधिक बीता। राज्य पर कर्ज लद गया। उसी अनुपात से ब्रिटिश हस्तक्षेप भी बढ़ गया। १८३८ में जवानसिंह की मृत्यु हो गई। उसके कोई बेटा न था। उसका गोद लिया हुआ बेटा सरदार सिंह राना हुआ। वह लोकप्रिय न था। १८४२ के जुलाई मास में उसकी मृत्यु हो

गई। उसका छोटा भाई सरूपसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। उसने कई आर्थिक सुधार किये। गदर में नीमच से भाग कर आये हुये कई अंग्रेज़ परिवारों को उसने शरण दी। १७ नवम्बर १८६१ में उसका स्वर्गवास हो गया।

उसका भतीजा महाराना शम्भू सिंह गद्दी पर बैठा। उसने १८७४ तक राज्य किया। उसके समय में अंग्रेज़ी ढङ्ग के जेल, पुलिस आदि विभागों में कई सुधार हुये राज्य की आय भी बढ़ गई। १८७४ में २७ वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई। उसका चचेरा भाई सज्जन सिंह गद्दी पर बैठा। उसके चचा सोहन सिंह ने ब्रिटिश सरकार का विरोध किया वह कैद करके पहले बनारस भेज दिया गया। फिर १८८० में कुछ शर्तों के साथ वह मुक्त कर दिया गया। सज्जन सिंह की अवस्था अधिक न थी। १८७६ में उसे राज्य करने का अधिकार दे दिया गया। १८७७ में वह दिल्ली के शाही दरबार में सम्मिलित हुआ। २१ तोपों से उसकी सलामी हुई। १८७६ में ब्रिटिश सरकार के आदेशानुसार नमक का बनाना बन्द कर दिया। राज्य

में होकर जाने वाले मालपर कर लेना भी बन्द कर दिया गया। इसके बदले में ब्रिटिश सरकार उदयपुर दरबार को २,०४,१५० रुपये वार्षिक देने लगी। और भी कई कर बन्द कर दिये गये। १८८४ में सज्जन सिंह की मृत्यु हो गई। उसके कोई बेटा न था। सर्व सम्मति से महाराज दल सिंह के बेटे और राना संग्राम सिंह द्वितीय के वंशज महाराना फतेह सिंह गद्दी के लिये चुने गये। उन्होंने १९३० ईस्वी तक राज्य किया। उनके समय में प्रजा बड़ी सुखी रही। उन्होंने शिक्षा आदि में कई शासन सुधार किये। उनके पश्चात् महाराजाधिराज महाराज भूपाल सिंह जो बहादुर जी० सी० यस० आई० के० सी० आई० ई० मेवाड़ की गद्दी पर बैठे।

प्रसिद्ध नगर

अमेत जागीर मेवाड़ के उत्तर पश्चिम में स्थित है। इसमें २६ गांव हैं। इस जागीर के स्वामी प्रथम कोटि के जागीरदार हैं और रावत कहलाते हैं। महाजन, जाट, राजपूत और ब्राह्मण इस जागीर के प्रधान निवासी हैं। इसके शासक राना लाखा (१३८२-६७) के वंशज है। इस का प्रधान नगर अमेत बनास की सहायक चन्द्र भागा के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह पहाड़ियों से घिरी हुई घाटी में उदयपुर शहर से ५० मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। इसकी जनसंख्या लगभग ४००० है। असींद जागीर मेवाड़ के उत्तर में स्थित है। इसमें ७२ गांव हैं। इस जागीर के स्वामी रावत कहलाते हैं। यह प्रथम कोटि के जागीरदार है। और सेसोदिया राजपूत हैं। कुम्हार, गूजर, राजपूत और ब्राह्मण इसके प्रधान निवासी है। इसकी आय लगभग १ लाख है। मेवाड़ दरबार को यहां से १००० रुपया कर मिलता है। इस जागीर का प्रधान नगर असींद है जो बनास की सहायक खारी

नदी के बायें किनारे पर स्थित है। यह उदयपुर शहर से ६० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। दाहिने किनारे पर दिल्लीपति पृथिवी राज चौहान के वंशज सवाई भोज के बनवाये हुये कुछ मन्दिर हैं। मन्दिरों के खर्च के लिये एक छोटी जागीर मिली हुई है।

बदनोर जागीर ब्रिटिश मेरवाड़ा जिले की सीमा के पास है। इसमें ११७ गांव हैं। जाट, महाजन और भील यहां के प्रधान निवासी हैं। इस जागीर के ठाकुर राठोर राजपूत हैं। यह राव जोधा के वंशज हैं जिन्होंने जोधपुर नगर बसाया था। इसी वंश के जयमल ने १५६७ में अकबर के घेरे से चित्तौड़ गढ़ की रक्षा करते करते अपने प्राणों की आहुति दी थी। उसके बेटे मुकुन्ददास ने अकबर से लड़ते लड़ते कुम्भल गढ़ के पास वीर गति प्राप्त की थी। बदनोर इस राज्य का प्रधान नगर है जो उदयपुर शहर से ९६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ डाकखाना और वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल है। उत्तर की ओर ताल के किनारे राना कुम्भ (१४३३-६८) का बनवाया हुआ मन्दिर है। कुछ आगे बैराटगढ़ (किले) के खंडहर हैं। पास

जंगल में चीते और भालू मिलते हैं। बागोर की जागीर राना संग्राम सिंह द्वितीय (१७१०-३४) के दूसरे बेटे नाथसिंह को दी गई थी। १८७५ तक यह उसके वंशजों के हाथ में रही। फिर यह जब्त कर ली गई और खालसा बना ली गई। बागोर ही इस जागीर का प्रधान नगर है जो बनास की सहायक कोठारी नदी के किनारे स्थित है। यह उदयपुर शहर से ७० मील उत्तर-पूर्व की ओर है।

बनेरा—जागीर में प्रधान नगर बनेरा और कुछ गांव हैं। गूजर, चमार, गड़रिया, राजपूत और चाकर यहां के निवासी हैं। यह पुराना नगर है। १५६७ में इसे अकबर ने लिया था। १६८१ में राना रामसिंह प्रथम के छोटे लड़के भीमसिंह ने दक्षिण की लड़ाई में औरंगज़ेब की सैनिक सहायता की थी। उसके बदले में उसे न केवल यह जागीर वरन राजा और पंज हज़ारी (५००० का सेनापति) की उपाधियां मिल गईं। यहां के राजा को दूसरे जागीरदारों की अपेक्षा विशेष अधिकार मिले हुये हैं। जब नया राजा गद्दी पर बैठने को

होता है तब उदयपुर से सम्मान पूर्वक यहाँ तलवार भेजी जाती है। फिर भावी तिलक कराने के लिये उदयपुर जाता है। पर उदयपुर दरबार की सम्मति के बिना नया राजा बनेरा की गद्दी पर नहीं बैठ सकता। बनेरा नगर बम्बई बड़ौदा सेण्ट्रल इंडिया रेलवे लाइन के मंडल स्टेशन से पांच मील पूर्व में और उदयपुर शहर से ६० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहीं महल और क़िला है। नगर चारदीवारी से घिरा है। यहां डाकघर और स्कूल है। पास ही एक बड़ा ताल है। बांसी जागीर में ५६ गांव हैं। यहां भील, ब्राह्मण और राजपूत रहते हैं। यहां के जागीरदार रावत कहलाते हैं। वे सेसोदिया राजपूतों के शक्टावत घराने के हैं। शक्तसिंह राना उदयसिंह (१५३७-७२) के दूसरे बेटे थे। उन्हीं के नाम से इस वंश का यह नाम पड़ा। बांसी गांव उदयपुर शहर से ४७ मील दक्षिण-पर्व की ओर है। यहां डाकखाना भी है। बड़ी सादड़ी की जागीर मेवाड़ के दक्षिण-पूर्व में है। यहां भील, महाजन, राजपूत, चमार, ढाकर और ब्राह्मण रहते हैं। यहां के राजा झाला राजपूत वंश के हैं। इनके पूर्वज झाला

अज्जा काठियावाड़ से आकर मेवाड़ दरबार में नौकरी करने लगे थे। उनके भाई सज्जा ने राना संग्राम सिंह के साथ साथ बाबर से लोहा लिया था। जब राना खन्डवा के युद्ध में घायल हुआ तो सज्जा ने हाथी के हौदे पर चढ़ कर युद्ध जारी रक्खा था। सज्जा लड़ता लड़ता युद्ध में मारा गया। लेकिन उसके बेटे को राजा की उपाधि और बड़ी सादड़ी की जागीर मिली। सादड़ी नगर उदयपुर से ५० मील पूर्व की ओर है। यहां राजा का महल और डाकखाना है। इसके चारों ओर पत्थर की चार दीवारी है। दक्षिण की ओर पहाड़ी पर एक पुराने क़िले के खंडहर हैं।

बेडला जागीर का कुछ भाग उदयपुर शहर के पास लेकिन अधिक बड़ा भाग चित्तौड़ के पास स्थित है। इस में १११ गांव शामिल हैं। यहां जाट, ब्राह्मण, राजपूत, महाजन, गूजर और डांगी रहते हैं। इस जागीर के राव दूसरी कोटि के चौहान राजपूत हैं और पृथिवी राज के वंशज हैं। बेडला ही इस जागीर का प्रधान नगर है। यह उदयपुर शहर से ४ मील उत्तर की ओर अहार नदी के किनारे स्थित है। इस जागीर का नगरी गांव

अति प्राचीन हैं। यहां बौद्ध कालीन कई सिक्के और स्तूप मिले हैं। यहां एक खोखला बुर्ज है जो अकबर के दीपक के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं अकबर ने इसके शिखर पर एक बड़ा प्याला रख कर तेल में कपास भिगो कर जलाई थी।

बेगून जागीर मेवाड़ के पूर्व में है। इसमें बेगून का एक नगर और १२७ गांव हैं। ठाकर, ब्राह्मण, महाजन, चाकर, बलई यहां के निवासी हैं। यहां के रावत सवाई मेवाड़ में प्रथम कोटि के जागीरदार हैं। इनके पूर्वज अकबर के एक सेनापति (मिरज़ा शाहरुख) के साथ लड़ते हुये जावद के पास मारे गये थे। बेगून में एक पुराना महल और मन्दिर है। यहीं नया महल, किला और डाकघर है। यह नगर समुद्र-तल से १३८३ फुट ऊँचा है और उदयपुर शहर से ९० मील उत्तर-पूर्व की ओर है।

भैंसरोगढ़ जागीर मेवाड़ राज्य के धुर पूर्व में है। इसमें १२७ गांव है। यहां के रावत प्रथम कोटि के जागीरदार हैं। ठाकर, भील, महाजन, ब्राह्मण, चमार और गुसांईं यहीं के प्रधान निवासी हैं।

इस जागीर की आय ८०,००० से ऊपर है। यहाँ से ६००० रु० मेवाड़ दरबार को कर मिलता है। इस जागीर का प्रधान गांव भैंसरोगढ़ है जो वामनी और चम्बल के संगम पर उदयपुर शहर से १२० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। चम्बल के ऊपर एक मात्र मार्ग की रक्षा के लिये यहां पुराने समय में किला बनाया गया था। रावत के महल की चोटी नदी तट से १६० फुट ऊंची है। १३०३ में अलाउद्दीन ने इस पर अधिकार कर लिया था। आगे चलकर राना ने इसे फिर जीत लिया और जागीर के रूप में देवराज को दे दिया था। देवराज की लड़की राना अरिसिंह को व्याही थी।

बरोलो—यह भैंसरोगढ़ से ३ मील उत्तर की ओर स्थित है। इसके पास अति प्राचीन मन्दिर हैं। इनमें घटेश्वर का मन्दिर बड़ा सुन्दर है। इसकी चोटी पर बढ़िया कारीगरी है। इसके पास ही सिंगार चावरी और गणेश-नारद के मन्दिर हैं। यहीं ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रिमूर्ति है। विष्णु की मूर्ति शेष शैय्या पर स्थित है।

भीलवाड़ा का जिला कुछ उत्तर की ओर स्थित है। इसमें २०५ गांव और दो (भीलवाड़ा और पुर) नगर हैं। यहां महाजन, जाट, ब्राह्मण, गूजर, गडरी, बलाई, राजपूत, चाकर, कुम्हार रहते हैं। इस जिले में भीलवाड़ा और मांडल की दो तहसीलें हैं। इस जिले से दरबार को प्रायः १ लाख रुपये की आय होती है। कई स्थानों पर गार्नेट मिलते हैं। भीलवाड़ा नगर जिले का प्रधान नगर है। यह भीलवाड़ा स्टेशन (बम्बई-बड़ौदा लाइन से आधमील और उदयपुर शहर से ८० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां प्रायः ८० प्रतिशत हिन्दू और १६ प्रतिशत मुसलमान रहते हैं। १८१८ में पिंडारियों की लूट मार से यह प्रायः उजड़ गया था। इस समय इसकी जनसंख्या १० से ऊपर है। यहां एक व्यापारिक केन्द्र है। यहां बर्तन बनाने कपास ओटने का काम होता है। यहां स्कूल, डाक तार घर, कचहरी और अस्पताल है।

मांडल इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह भीलवाड़ा से ९ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसकी जनसंख्या प्रायः ४००० है। इसके उत्तर में

एक पुराना ताल है। इसके किनारे पर अकबर के बनवाये हुये भवनों के खंडहर हैं। एक ओर अम्बर (जैपुर) के राजा बहारमल के बेटे जगन्नाथ कछवाह की छतरी है। उसकी मृत्यु यहीं १६१० में हुई थी। कुछ समय के लिये परवेज़ और महाबत खां की सेनाओं ने यहां अपना अधिकार कर लिया था। १६१४ में यह फिर राना को लौटा दिया गया था। औरंगज़ेब ने इसे जुनिया (अजमेर जिले के) राठोर ठाकुर को जागीर में दे दिया था। १७०६ से राना ने फिर इस पर अपना अधिकार कर लिया। उस समय से यह मेवाड़ राज्य के ही अधिकार में है।

पुर भीलवाड़ा स्टेशन से ७ मील दक्षिण-पश्चिम में और उदयपुर शहर से ७२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह मेवाड़ राज्य के प्राचीन नगरों में से एक है। यहां कुछ बारूद बनाई जाती है। पहाड़ों पर एक मील पूर्व में मूल्यवान गार्नेट भी पाये जाते हैं। यहां दरबार की ओर से एक प्राइमरी स्कूल है।

भींडर जागीर—मेवाड़ के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसमें १ नगर और १०१ गांव है। यहां के महा-

राज प्रथम कोटि के जागीरदार है और शक्तवत वंश के सेसोदिया राजपूत हैं। यहां ब्राह्मण, जाट और मीना रहते हैं। महाराज की वार्षिक आय ५०,००० रुपये है। भींडर नगर चारदीवारी और खाई से घिरा है। यहीं इस जागीर की राजधानी और डाकघर है। यह उदयपुर शहर से ३२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है।

बिजोलिया की जागीर मेवाड़ के पूर्वी भाग में है। इसमें ८३ गांव हैं। यहां के राव सवाई प्रथम कोटि के पंवार राजपूत हैं। यहां ढाकर, भील, ब्राह्मण और महाजन रहते हैं। वार्षिक आय प्रायः ६०,००० है। दरबार को प्रायः ३००० कर देते हैं। इस रावा वंश के पूर्वज बयाना के पास नगनेर के राव थे। राना सांगा के समय (१५०८-१५२७) में राव अशोक यहां आकर बस गये। तभी उनको यह जागीर मिली। समय समय पर यहां के राव औरंगजेब और मेवाड़ के दूसरे शत्रुओं से बराबर लड़ते रहे। उज्जैन की लड़ाई में १७६६ में यहां के राव घायल हुये थे। तभो से यहां के राव सवाई कहलाने लगे। बिजोलिया गांव बूंदी की सीमा के पास उदयपुर शहर

से ११२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। इसका प्राचीन नाम विन्ध्यावली है। यह एक ऊंचे पठार पर बसा है। यहां दसवीं शताब्दी के बने हुये कई शिव-मन्दिर हैं। एक पुरानी बावली है जिसे मन्दाकिनी बावरी कहते हैं। ऊंची भूमि पर पांच जैन मन्दिर बने हैं।

छोटी सादड़ी दक्षिणी-पूर्व में एक जिला है। इसमें एक नगर और २०९ गांव हैं। इसमें दो तहसीलें (छोटी सादड़ी और कुराज) इसकी जनसंख्या लगभग ५०,००० है। मीना, चमार, ब्राह्मण, राजपूत और महाजन यहाँ के निवासी हैं। यह मेवाड़ राज्य का सब से अधिक उपजाऊ जिला है। इसमें प्रायः काली मिट्टी है जहां कपास और दूसरी फसलें बड़ी अच्छी होती है। इसजिले में होकर जाकम नदी बहती है। खेतों को सींचने के लिये अनेक कुये हैं। इस जिले से दरबार को एक लाख रुपये से अधिक की आय होती है। छोटी सादड़ी नगर इस जिले की राजधानी है। यह उदयपुर शहर से ६६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह एक चारदीवारी से घिरा है। यहां प्राइमरी स्कूल, डाकघर और अस्पताल है।

मेवाड़-दर्शन

चित्तौड़ जिला मध्यवर्ती मेवाड़ के पूर्वी भाग में शामिल है। इसमें चित्तौड़ का एक नगर और २४० गांव हैं। इसमें तीन (चित्तौड़, कनेरा, और नागावली) तहसीलें हैं। यहाँ ब्राह्मण, जाट, महाजन, राजपूत, ठाकुर, गूजर और गडरी रहते हैं। बराच नदी यहां होकर बहती है। इस जिले की अधिकतर मिट्टी उपजाऊ और काली है। पहाड़ियों के समीप पथरीली लाल मिट्टी है। इस जिले की आय लगभग सवा लाख है। चित्तौड़ शहर चित्तौड़ रेलवे स्टेशन से २ मील पूर्व की ओर है। यह उदयपुर शहर से ६७ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ उदयपुर-चित्तौड़ शाखा लाइन और बी बी एण्ड सी आई की प्रधान लाइन का जंक्शन है। प्रधान लाइन अजमेर से खंडवा को जाती है। स्टेशन के पास ही प्रधान डाक-तार घर है। चित्तौड़ शहर पहाड़ी के पश्चिमी ढाल पर बसा है। पहाड़ी के ऊपर चित्तौड़ का प्रसिद्ध किला है। नगर में मिडिल स्कूल, प्राइमरी स्कूल अस्पताल और डाकघर है। पहले यहां टकसाल थी जहां सोने चाँदी और ताँबे के सिक्के ढाले जाते थे। जिस पहाड़ी पर चित्तौड़ का प्रसिद्ध किला बना है वह उत्तर

से दक्षिण तक सवा तीन मील लम्बी और आध मील चौड़ी है। यह पड़ोस के मैदान के ऊपर ५०० फुट ऊंची उठी हुई है। इसका क्षेत्रफल ६९० एकड़ है। कहते हैं यहां पांडवों के भाई भीम ने गढ़ बनवाया था। राजसूय यज्ञ के लिये पांडवों को धन की आवश्यकता थी। इसी खोज में भीम इधर आये। उस समय पहाड़ी के गौमुख के पास निर्भयनाथ नामी योगी रहते थे। कुक्रेश्वर में एक यती रहते थे। भीम ने योगी से पारस पत्थर मांगा। योगी ने कहा यदि आप एक रात्रि में पहाड़ी के ऊपर गढ़ बना दें तो मैं आप को पारस पत्थर दे दूंगा। भीम राजी हो गये। अपने पराक्रम और देवताओं की सहायता से भीम ने पहाड़ी पर किले का अधिकतर भाग पूरा कर लिया। दक्षिण का कुछ भाग शेष था। इतने में योगी के आदेश से यती ने रात्रि के रहते ही कुक्कुट का शब्द किया इस से प्रातःकाल समझ कर भीम ने एक स्थान पर लात मारी वहां भीम लात नाम का ताल बन गया। जहां उसका घुटना था वहां भीम गोदी नाम का ताल बन गया। जिस स्थान पर यती ने कुक्कुट शब्द किया

था वह कुकरेश्वर कुंड के नाम से प्रसिद्ध हो गया। जिस स्थान पर भीम ने शिव लिंग स्थापित किया था वहां इस समय नीलकंठ महादेव का मन्दिर है। आगे चलकर यहां मौर्य या मोरी राजपूतों की राजधानी बनी। इस स्थान का नाम चित्रकोट पड़ गया। ७३४ में बापा रावल ने यह किला मौर्य राजपूतों से छीन लिया। १५६७ तक यहीं मेवाड़ की राजधानी रही। इसके बाद राजधानी उदयपुर चली गई। चित्तौड़ पर तीन बार (१३०३ में अलाउद्दीन ने, १५३४ में गुजरात के बहादुर शाह ने और १५६७ में अकबर ने) मुसलमान बादशाहों ने चढ़ाई की। तीनों बार वीर राजपूतों ने लड़ते लड़ते रणक्षेत्र में और वीरांगनाओं ने चिता पर जलकर अपने प्राणों की आहुति दी।

झाली बाव (ताल) के पास से चित्तौड़ नगर की चढ़ाई आरम्भ होती है। ऊपर बढ़ने में बारी बारी से ७ द्वार मिलते हैं। एक मार्ग उत्तर की ओर है। दूसरा मार्ग दक्षिण की ओर है। दक्षिण मार्ग में बनवीर का बनवाया हुआ तुलजा भवानी का मन्दिर मिलता है। दक्षिण की ओर नौ लाख भंडार और

विशाल खम्भों वाला नौ कोठा है। इनके बीच में सिंगार चावरी का छोटा सुन्दर मन्दिर है। इसमें कई लेख हैं। इसे चौदहवीं शताब्दी में भंडारी बेला ने बनवाया था भंडारी बेला राना कुम्भ के भंडारी (खजांची) का बेटा था। इसके सामने दरबार का महल है। इसका बहुत सा भाग गिर गया है। पास ही एक जैन मन्दिर है। दक्षिण की ओर कुम्भ श्याम (श्री कृष्ण जी) का मन्दिर है जिसे राना कुम्भ ने १४५० ईस्वी में बनवाया था। दक्षिणीद्वार के पास श्यामनाथ का मन्दिर है जिसे राना सांगा के बड़े बेटे भोजराज की धर्म पत्नी मीरा ने बनवाया था। पहाड़ी पर जयस्तम्भ सब से ऊंचा बना है। इसे १४४२ और १४४९ के बीच में राना कुम्भ ने बनवाया था जिसने मालवा और गुजरात के बादशाहों की संयुक्त सेनाओं को हराया था। इसी विजय की स्मृति में उसने यह स्तम्भ बनवाया था। यह स्तम्भ १२० फुट से अधिक ऊंचा है। निचले भाग में इसका व्यास ३० फुट है। यह नौ मंज़िला है। ऊपर चढ़ने के लिये जीना बना है। ऊंचाई में कुतुब मीनार इससे अधिक ऊंची है। पर कारीगरी में कुतुब मीनार इसके सामने कुछ भी नहीं है। इतना ऊंचा संसार का कोई स्तम्भ ऐसी

बढ़िया कारीगरी से सुसज्जित नहीं है। अधिक आगे सती स्थान और महादेव का मन्दिर है। दीवार के पास गौमुखी ताल है। जिसमें ऊपर हाथी कुंड से पानी आता है। पास ही कालिका देवी का मन्दिर है। यहां पहले सूर्य देव का मन्दिर है। यह किले भर में सब से अधिक पुराना है। अधिक दक्षिण की ओर रानारत्न सिंह और उसकी रानी पद्मिनी का महल है। कहते हैं अलाउद्दीन ने पद्मिनी के अद्भुत रूप की प्रशंसा सुनकर ही चित्तौड़ लेने का निश्चय किया था। एक ओर राज टीला है जहां मौर्य राजपूतों के महलों के खंडहर हैं। इनके पास ही इनका बनवाया हुआ एक मन्दिर है जो इस समय जीर्ण अवस्था में है। किले के दक्षिणी सिरे पर एक गोल पहाड़ी है जिसे चितोरिया कहते हैं। यह प्रधान पहाड़ी से १५० गज़ दूर है दोनों के बीच में जीन के समय एक छोटा टीला है जो किले की दीवार से ५० गज़ नीचे है। सूरज पोल या सूर्य द्वार पूर्व की ओर है। यहां सलूम्बर के रावत की स्मृति में एक चबूतरा बना है जो अकबर के घेरे के समय यहां मारा गया था।

यहीं एक जैन स्तम्भ है जो कीर्ति-स्तम्भ के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्तम्भ को बारहवीं शताब्दी में जीजा नामी एक महाजन ने प्रथम तीर्थंकर आदि नाथ की स्मृति में बनवाया था। यह ८० फुट ऊंचा है। नीचे से ऊपर तक इसमें सुन्दर चित्रकारी है। आदि नाथ की मूर्ति लगभग सौ बार बनाई गई है। कुछ वर्ष हुये इसकी मरम्मत की गई थी। एक स्थान पर राना रत्नसिंह का बनवाया हुआ महल और ताल है। राना रत्नसिंह १३०३ में अलाउद्दीन से लड़ते हुये मारे गये थे। महल को प्रायः डूंगरपुर के हिंगल अहारिया नाम से पुकारते हैं। यहां अन्न पूर्ण-मन्दिर कुक्रेश्वर कुंड और लखोटा बारी भी देखने योग्य है। यहां कुछ बौद्ध स्तूप भी हैं। स्थानीय लोग इन्हें लिंगम समझते हैं।

देलवाड़ा जागीर मेवाड़ के पश्चिम में अरावली की पूर्वी पहाड़ियों के बीच में स्थित है। इसमें ८६ गांव है। यहां के राजा राना झाला राजपूत है। राजपूत, *भील, डांगी और महाजन* यहां के प्रधान निवासी हैं। यह वंश काठियावाड़ के हलवद से आये हुये सज्जा से उत्पन्न हुआ है। सज्जा को ही देलवाड़ा

की जागीर मिली थी। जब बहादुर शाह ने १५३४ में चित्तौड़ का घेरा डाला था तभी सज्जा लड़ाई में मारा गया। इसी वंश का मानसिंह प्रथम १५७६ में हल्दी घाट की लड़ाई में मारा गया। कल्याण सिंह प्रथम ने राना अमर सिंह की ओर से जहांगीर से युद्ध किया था। रघुदेव प्रथम राना राजसिंह की ओर से औरंगज़ेब के विरुद्ध लड़ता हुआ मारा गया। देलवाड़ा इस जागीर का प्रधान गांव है जो उदयपुर शहर १४ मील ठीक उत्तर की ओर है। कहते हैं देलवाड़ा को भोगादित्य के बेटे देवा दित्य ने बसाया था। यहां सोलहवीं शताब्दी के बने हुये तीन मन्दिर हैं। इन्हें जैन की बासी कहते हैं। इनमें एक पारसनाथ का मन्दिर है। इसके ऊपर दो बड़े मंडप बने हैं। रखभ नाथ के मन्दिर मे बढ़िया कारीगरी है। सब से पुराने भाग में पहले विष्णु मन्दिर था। यहां राना का महल और डाकघर है।

देवगढ़ जागीर मेवाड़ के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। इसमें एक नगर और १८१ गांव है। यहां के रावत प्रथम कोटि के जागीरदार हैं। ब्राह्मण, राजपूत

बलई, महाजन, गूजर और जाट यहां के प्रधान निवासी हैं। जागीर की आय लगभग सवा लाख है। देवगढ़ इस जागीर की राजधानी है। यह उदयपुर से ६८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यह चारदीवारी से घिरा हुआ है। एक ओर रावत का महल और दूसरी ओर किला है। यहां डाकघर और धर्मशाला है। प्रतिवर्ष मेला लगता है।

देव स्थान का ज़िला मेवाड़ के प्रायः मध्य में स्थित है। इसमें १०२ गांव और छः (बन का खेडा, बोर्सान, घनेरा, कैलाशपुरी, या एकलिंग जी, कबोर और पन्लान) तहसील हैं। राजपूत, भील, महाजन, जाट, गूजर और बलई यहां के प्रधान निवासी हैं।

एकलिंग जी या कैलाश पुरी उदयपुर शहर से १२ मील उत्तर की ओर एक तंग घाटी में स्थित है। यहां बापा रावल को हारति ऋषि के दर्शन हुये थे। ऋषि जी के आदेश से यहां उन्होंने महादेव जी (जो यहां एकलिंग नाम से प्रसिद्ध हैं) का एक मन्दिर बनवाया। इनकी कृपा से बापा को चित्तौड़ प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई। आगे चलकर बापा सन्यासी

हो गये। यही आठवीं शताब्दी में उनकी मृत्यु हुई। यहां एक ताल और कई दूसरे मन्दिर हैं। एक मन्दिर मीराबाई का बनवाया हुआ है। यहां से कुछ ही दूरी पर बापा की समाधि है।

नागदा या नागहृद एकलिंग के पास ही मेवाड़ के अति प्राचीन स्थानों में से है। कहते हैं इसे नागादित्य बापा के पूर्वज ने सातवीं शताब्दी में बसाया था। यहां गहलोट राजपूतों की कुछ समय तक राजधानी रही। सास, बहू का युगल विष्णु मन्दिर बड़ा सुन्दर है। अद्भुत जी के जैन मन्दिर में अधिक बड़ी मूर्तियां हैं। यहां विष्णु जी के दो छोटे मन्दिर, तोरण और मंडप हैं।

गिर्वा जिला राज्य के प्रायः मध्य में स्थित है। इसमें उदयपुर का शहर और ४८६ गांव हैं। इसमें पाँच (गिर्वा, लसारिया, माओली नाई, उंताला) तहसीलें हैं। इस जिले की आबादी प्रायः डेढ़ लाख है। ब्राह्मण, महाजन, भील, डाँगी, राजपूत मीना और गडरी यहाँ के प्रधान निवासी हैं। इसकी आय १ लाख है।

देश दर्शन

उदयपुर शहर मेवाड़ राज्य की राजधानी है। यह २४°.३५' उत्तरी अक्षांश और ७३°.४२' पूर्वी देशान्तर में स्थित है। उदयपुर-चित्तौड़ शाखा लाइन का यहाँ अन्तिम स्टेशन है। यह चित्तौड़ से ६७ मील दूर है। बम्बई यहाँ से ६९७ मील दक्षिण की ओर है। झील के किनारे एक निचली पहाड़ी के ढाल पर उदयपुर की स्थिति बड़ी मनोहर है। महाराना का राजमहल इस पहाड़ी की चोटी पर बना है। उत्तर और पश्चिम की ओर घर पिचोला झील के किनारे तक चले गये हैं। झील के उस पार वृक्षों से ढकी हुई पहाड़ियाँ हैं।

प्रधान शहर तीन ओर चार दीवारी से घिरा है। इसके बीच बीच में बुर्ज हैं। पश्चिम की ओर झील है। चारदीवार से मिली हुई चौड़ी खाई है। सूरजपाल या सूर्य द्वार पूर्व की ओर है। किशन पोल दक्षिण की ओर है। उत्तर-पश्चिम में चाँद पोल उत्तर की ओर हाथी पोल और उत्तर-पूर्व की ओर दिल्ली पोल है। ये पोल या द्वार किले बन्दी के उत्तम नमूने हैं। इस शहर का जगन्नाथ राय जी का मन्दिर राना

जगतसिंह प्रथम ने १६५२ में बनवाया था। इसमें एक सुन्दर मंडप, ऊंचा शिखर और गरुड़ की विशाल मूर्ति पीतल की बनी है। जगतशिरोमणि मन्दिर को महाराना सरूपसिंह ने १८४८ में बनवाया था। यह महल के बाहर बना है।

राजमहल १५०० फुट लम्बे और ८०० फुट चौड़े घेरे में बना है। यह राजपूताना भर में सब से बड़ा राजमहल है। यह बहुत कुछ इंगलैंड के विंडज़र राज-महल से मिलता जुलता है। महल का सब से पुराना भाग १५७१ ईस्वी में बना। ऊपरी भाग सुन्दर संग-मरमर का बना है। संगमरमर की जाली में बढ़िया कारीगरी है। १६२० में राना करनसिंह द्वितीय ने दिलकुशा महल बनवाया। इसमें शीशे का काम है। इसके कुछ भाग रंगीन और सुनहले हैं। कुछ चीन की चित्रशाली है। एक कमरा हालैंड के बने हुये खपरैलों से सुसज्जित है। पीतम निवास में शीशे और चीनी, मिट्टी के बने हुये टुकड़ों से सजा है। मानक महल लाल और दूसरे बहुमूल्य पत्थरों से सजा है। मरदाना महल के दक्षिण में जनाना महल है। इसके आगे शम्भू निवास है।

कहते हैं पिचोला, झील के बनाने का कार्य एक बंजारे ने पूरा किया था। १५६० में राना उदयसिंह ने बांध ऊँचा किया था। यह झील सवा दो मील लम्बी और सवा मील चौड़ी है। इसका क्षेत्रफल एक वर्ग मील से अधिक है। इसमें प्रायः ४८ करोड़ घन फुट पानी समा सकता है। इसमें द्वीप पर दो महल बने हैं, जगमन्दिर को राना जगत सिंह प्रथम ने १६२८ और १६५२ के बीच में बनवाया था। जगनिवास को राना जगतसिंह द्वितीय ने १७३४ और १७५१ के बीच में बनवाया था। जब खुर्रम (शाहजहां) ने अपने पिता जहांगीर के प्रति विद्रोह किया था तो उसने यहीं शरण ली थी। गदर में यहीं राना सरूपसिंह ने कुछ गोरे परिवारों को अतिथि सत्कार पूर्वक रक्खा था। यह तरह तरह के संगमरमर और दूसरे पत्थरों से सजा है। जग निवास में छोटे कमरे और संतरा, केला, ताड़ आदि फलों के बगीचे हैं। यह सदा हरा भरा रहता है। यह द्वीप महल संसार भर में अपनी शोभा और सुन्दरता के लिये अद्वितीय है। इटली में मेगायर झील के द्वीप भवन इनके सामने कुछ भी नहीं हैं। उत्तर की ओर फतेह सागर

है जिसे महाराना फतेह सिंह ने बनवाया था। यह डेढ़ मील लम्बी और १ मील चौड़ी है। इसका बांध २८०० फुट लम्बा है। इस झील में चार मील लम्बी एक नहर द्वारा अहार नदी से पानी आता है। इसमें ९ वर्ग मील का वर्षा जल आता है। इसमें ५६ करोड़ घनफुट पानी समा सकता है।

उदयपुर का सज्जन निवास बगीचा भी बड़ा सुन्दर है। विक्टोरिया हाल के सामने महारानी विक्टोरिया की मूर्ति बनी है। इस हाल में पुस्तकालय, वाचनालय और अजायबघर है। दो मील दक्षिण की ओर एक लिंगगढ़ की पहाड़ी है। यह समुद्र-तल से २४६९ फुट ऊंचो है। इस पर एक विशाल तोप उस समय चढ़ाई गई थी जब १७६९ में सिन्धिया ने उदयपुर शहर को घेर लिया था। पिचोला झील के दक्षिणी सिरे पर खास ओदो के पास जंगली सुअर भोजन करने आते हैं। सहेली का बाग भी अच्छा है। सज्जन गढ़ पहाड़ी और महल समुद्र-तल से ३१०० फुट ऊंचे हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर बारी तलाब है।

अहार गांव इसी नाम की नदी के किनारे उदयपुर शहर से २ मील पूर्व की ओर है। यहां एक छोटा मिशन स्कूल और महासती है। जहां रानाओं की छतरी है। इसके पूर्व में एक प्राचीन नगर के खंडहर हैं। कहते हैं इस प्राचीन नगर को आशादित्य ने बसाया था। इसे धूल कोट कहते हैं। एक मन्दिर के भग्नावशेषों पर बढ़िया कारीगरी है।

गोगुंडा जागीर पश्चिम की ओर है। इसमें ७५ गांव हैं। यहां के राजा झाला राजपूत और प्रथम कोटि के जागीरदार हैं। राजपूत भील और महाजन यहां के प्रधान निवासी हैं। इस जागीर का प्रधान नगर गोगुंडा है जो समुद्र-तल से २७५७ फुट की उंचाई पर उदयपुर शहर से १६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है, इसके चारों ओर खुला हुआ लहरदार मैदान है। दक्षिण-पूर्व की ओर एक जलाशय है। यहां की जलवायु अच्छी है। यहां के निवासी दूसरे भागों की अपेक्षा अधिक दीर्घायु वाले होते हैं। यहां से पन्द्रह मील उत्तर की ओर अरावली की जार्गो श्रेणी सबसे अधिक ऊंची समुद्र तल से ४३१५ फुट है।

हुर्रा इसी नाम के परगने का प्रधान नगर है। यह अजमेर-खंडवा लाइन के बारी स्टेशन से ३ मील दूर है।

जहाज़पुर जिला मेवाड़ के उत्तर-पूर्व में है। इसमें एक (जहाज़पुर) नगर और ३०६ गांव हैं। यहां जहाज़पुर और रूपा दो तहसीलें हैं। भील, मीना, गूजर, राजपूत, महाजन, ठाकुर यहां के प्रधान निवासी हैं। जिले की आय लगभग १ लाख रुपये हैं। जहाज़-पुर देउली छावनी से १२ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यहाँ डाकखाना, छोटी जेल, अस्पताल और वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल है। दक्षिण की ओर पहाड़ी पर पुराना क़िला है। चारदीवारी दोहरी है। इसके चारों ओर गहरी खाईं है। मेवाड़ की सीमा की रक्षा के लिये इस गढ़ को राना कुम्भ ने बनवाया था। नगर में कई शिवाले हैं जिन्हें बारह देउरा कहते हैं। नगर और किले के बीच में गायबी पीर (मस्जिद) है। इस नाम का मुसलमान फकीर अकबर के समय में यहाँ रहता था। कहते है युधिष्ठिर के पुत्र जन्मेजय ने यहाँ यज्ञ किया था। इसी से इसका पुराना नाम

यत्तपुर या जजपुर था इसीसे बिगड़ कर इसका वर्तमान नाम (जहाज़पुर) पड़ा। १५६७ में अकबर ने इस पर अधिकार कर लिया था। ७ वर्ष बाद यह नगर राना प्रताप के छोटे भाई जगमल को मिल गया था। बड़े भाई से रुष्ट होकर जगमल अकबर से जा मिला था। कुछ समय तक यहाँ शाहपुरा के राजा और कोटा के मन्त्री जालिम सिंह का अधिकार रहा। अन्त में यह फिर मेवाड़ राज्य को लौटा दिया गया।

काचोला जागीर मेवाड़ के उत्तर-पूर्व में स्थिति है। इसमें ९० गाँव हैं जिन पर शाहपुरा के राजाधिराज का अधिकार है। यह सेसोदिया राजपूतों के रानावत वंश के हैं। जाट, गूजर, राजपूत और ब्राह्मण यहाँ के प्रधान निवासी हैं। यहाँ की आय ५०,००० है। २४०० रु० उदयपुर दरबार को भूमि कर के रूप में मिलता है। यह जागीर राना अमरसिंह प्रथम के छोटे लड़के सूरजमल को मिली थी। काचोल का छोटा गाँव बनास नदी से तीन मील की दूरी पर उदयपुर शहर से १०० मील उत्तर-पूर्व की ओर और शाहपुरा

से २० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यही इस जागीर की राजधानी है।

कांक्रोरी जागीर में २१ गांव है जो मेवाड़ राज्य के भिन्न भिन्न भागों में स्थित हैं। यह गांव महाराना की ओर से द्वारकाधीश मन्दिर के गुसाईं को माफी में मिले हुये हैं। कांक्रोरी इस जागीर का प्रधान नगर है जो उदयपुर शहर से ३६ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। इसके उत्तर में राजसमन्द (ताल) है। बांध के एक सिरे पर द्वारकाधीश (श्रीकृष्ण) जी का मन्दिर है। कहते हैं यहाँ वही मूर्ति है जो १६६९ में वल्लभाचार्य के वंशज औरंगज़ेब के डर से मथुरा से यहाँ ले आये थे। राना राजसिंह ने उन्हें मेवाड़ में बुला लिया और असोतिया का गांव उनके खर्च के लिये दे दिया था। १६७६ में यह मूर्ति बड़ी धूम धाम से असोतिया गांव (जो मन्दिर से १ मील दूर है) से द्वारकाधीश के मन्दिर में प्रतिष्ठित की गई। उत्तर की ओर पहाड़ी पर एक जैन मन्दिर के भग्नावशेष हैं। इसे राना राजसिंह प्रथम के मन्त्री दयाल साह ने बनवाया था। कानोर की जागीर मेवाड़ के दक्षिण में

हैं। इसमें ११० गांव हैं। जागीरदार सेसोदिया राजपूत हैं और रावत कहलाते हैं। भील, महाजन, ब्राह्मण और राजपूत यहां के प्रधान निवासी हैं। काकोल इस जागीर का प्रधान नगर है यह समुद्र-तल से १६३५ फुट ऊंचा है और उदयपुर शहर से ३८ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहाँ लगभग ५००० मनुष्य रहते हैं।

कपासन जिला—मेवाड़ राज्य के मध्य में स्थित है। इसमें १४२ गाँव और तीन (कपासन, अकोला और जास्मा) तहसीलें हैं। जाट, ब्राह्मण, महाजन गउरी और भील यहाँ के प्रधान निवासी हैं। इस जिले की आय लगभग सवा लाख है। कपासन नगर इसकी राजधानी है और इसी नाम की रेलवे स्टेशन से २ मील उत्तर की ओर है। उदयपुर चित्तौड़ लाइन पर यह उदयपुर शहर से ४५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ डाकघर, प्राइमरी स्कूल, अस्पताल और सुन्दर ताल है।

खमनोर गाँव इसी नाम के परगने का केन्द्र स्थान है। यह बनास नदी के दाहिने किनारे पर उदयपुर शहर से २६ मील उत्तर की ओर है।

खेरवाड़ा का भूभाग या जिला गिरासिया ठाकुरों (सरदारों) के हाथ में है। यह राज्य के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में स्थित है। इसमें एक नगर (खेरवाड़ा छावनी) और ११६ गाँव हैं इसका क्षेत्रफल ६०० वर्ग मील है। छावनी पर रेज़ीडेन्ट का अधिकार है। यह मेवाड़ भील सेना का प्रमुख स्थान है। यह उदयपुर से पचास मील दक्षिण की ओर समुद्र तल से १०५० फुट ऊंची गोदावरी नाम की एक छोटी नदी की घाटी में स्थित है। मेवाड़ के पहाड़ी प्रदेश का पोलिटिकल सुपरिण्टेण्डेण्ट भी यहीं रहता है। छावनी के अतिरिक्त यहाँ डाकघर, डाकबंगला, अस्पताल और चर्चमिशनरी सोसाइटी का स्कूल है।

कोठारिया जागीर मेवाड़ के पूर्व में है। इस में ८१ गाँव हैं। यहाँ के रावत चौहान राजपूत हैं, राजपूत ब्राह्मण, बलई, जाट और चमार यहाँ के प्रधान निवासी हैं। मानिक चन्द ने इस जागीर की नींव डाली। मानिकचन्द ने बाबर की अग्रिम सेना को नष्ट करके इसके डेरे राना साँगा को भेंट किये थे। तभी से यहां लाल डेरों की प्रथा चल पड़ी। इसी वंश के खान्जी

चित्तौड़ की रक्षा करते करते १५६७ में मारे गये थे। साहिब सिंह राना प्रताप और राना अमर सिंह के समय में वीरता से लड़े थे। रूकमांगद ने राना राज-सिंह की ओर से औरंगज़ेब से लोहा लिया था। कोठारिया इस जागीर का प्रधान नगर है जो बनास नदी के किनारे स्थित है। यह उदयपुर से लगभग २५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है।

कोटरा का भूमात गीरासिया जागीरदारों के हाथ में है। यह राज्य के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इसमें एक नगर (कोटरा छावनी) और २४२ गाँव है। इसका क्षेत्रफल ६५० वर्ग मील है। यहाँ ७० प्रतिशति निवासी भील हैं। १० प्रतिशित राजपूत हैं। यह भूमात जूरा और ओघना के राव और पनर्वा के राना के हाथ में है। यह पहाड़ी प्रदेश का अंग है। इसका राजनैतिक निरीक्षण मेवाड़ भील कोर के उप सेनापति के हाथ में है। कोटरा छावनी वाकल और साबरमती के संगम के पास एक छोटी घाटी में स्थित है। यह वनाच्छादित पहाड़ियों से घिरी है। पूर्व की ओर इन पहाड़ियों की उंचाई समुद्र-तल से ३००० फुट है। कोटरा

छावनी उदयपुर शहर से ३८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर और अजमेर-खंडवा लाइन के रोहेरा रेलवे स्टेशन से २४ मील दक्षिण पूर्व की ओर है।

कोटरा में मेवाड़ भील कोरकी दो कम्पिनियां रहती हैं। यहां डाकघर प्राइमरी स्कूल और अस्पताल है। कुम्भलगढ़ परगना राज्य के पश्चिम में अरावली की पहाड़ियों में स्थित है। इसमें १६५ गांव है। राजपूत भील, ब्राह्मण और महाजन यहां के प्रधान निवासी हैं। केलवाड़ा इस परगने का प्रधान नगर है यह अरावली के मध्य में कुम्भलगढ़ (किले) से ढाई मील दक्षिण की ओर और उदयपुर शहर से ३८ मील उत्तर की ओर है। यह हाथीदगा नाल में या दर्रे के सिरे पर स्थित है। यहां से जोधपुर के घानेराव को मार्ग गया है। जब राना लक्ष्मण सिंह और उसके ७ बेटे चित्तौड़ की रक्षा के लिये अलाउद्दीन से लड़ते हुये मारे गये थे तब राना के आठवें बेटे अजय सिंह ने यहीं शरण ली थी। १४४१ में मालवा के महमूद खिल्जी ने इस पर अपना अधिकार कर लिया था।

देश दर्शन

कुम्भलगढ़ या कुम्भल मेर को राना कुम्भ ने १४४३ और १४५८ के बीच में बनवाया था। इसी स्थान पर ईसा से २०० वर्ष पूर्व एक जैन राजा सम्राट ने किला बनवाया था। यह उदयपुर से ४० मील उत्तर की ओर ३५६८ फुट ऊंची अरावली की पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ से मारवाड़ के रेगिस्तान और अरावली की बनाच्छादित पहाड़ियों का बड़ा सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। यह एक विशाल चारदीवारी से घिरा है। अड़ेत पोल और हनूमान पोल प्रधान द्वार हैं। ऊपर चोटी पर बने हुए नीलकंठ महादेव के मन्दिर तक पहुंचने के लिये चार और द्वार पड़ते हैं। किले के बाहर कुछ जैन मन्दिर हैं। १५७८ में अकबर के सेना पतियों के हाथ लग गया था।

कुराबर जागीर मेवाड़ के दक्षिण में है। यहां के रावत प्रथम कोटि के जागीरदार हैं। यह चन्दावत वंश के सेसोदिया राजपूत हैं। इस जागीर में ६६ गांव है। राजपूत, डांगी, मीना और महाजन यहां के निवासी हैं। कुरावर नगर इस जागीर की राजधानी है। यह गोदी नदी के किनारे स्थित है और उदयपुर शहर से २० मील दक्षिण-पूर्व को ओर है।

मगरा जिला दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसमें ३२० गांव और सरार, खेरवाड़ा, कल्याणपुर, जावरक यहां ४ तहसीलें हैं। एक तिहाई से अधिक भील हैं। डांगी, राजपूत, महाजन और ब्राह्मण दूसरे निवासी हैं। यह प्रदेश ऊंचा नीचा है और पहाड़ी है। लोगों को अंकुश में रखने के लिये दरबार को यहां कुछ सेना और तोपें रखनी पड़ती हैं। सरार जिले का केन्द्र-स्थान है। यहां डाकघर, स्कूल और अस्पताल है।

रखभदेव गाँव मंगरा जिले की पहाड़ियों के बीच में उदयपुर शहर से ४० मील दक्षिण की ओर और खेरवाड़ा छावनी से १० मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। इसके पड़ोस में फीके हरे रंग का पत्थर निकाला जाता है जिससे मूर्तियां और बर्तन बनाये जाते हैं! यहां आदि नाथ या रखभनाथ के जैन मन्दिर का दर्शन करने के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं। प्रधान मूर्ति १ गज़ ऊंची है और काले संगमरमर की बनी है। काला रंग होने के कारण भील लोग इसे काला जी कहते हैं। इस पर केसर लगाई जाती है। इसलिये कुछ लोग इसे केसरिया जी कहते हैं।

देश दर्शन

मांडलगढ़ का जिला राज्य के उत्तर-पूर्व में स्थित है। इसमें २५८ गाँव और २ (कोटरी और मांडलगढ़) तहसीलें हैं। ब्राह्मण, गूजर, जाट, राजपूत और महाजन यहां के प्रधान निवासी हैं। मांडलगढ़ इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह उदयपुर से १०० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां डाकखाना, मिडिल स्कूल और अस्पताल है। उत्तर पश्चिम की ओर पहाड़ी पर किला है। यह लगभग आध मील लम्बा है। इसकी चार दीवारी नीची है। बारहवीं शताब्दी में एक राजपूत सरदार ने इस किले को बनवाया था। १३९६ में गुजरात के मुहम्मदशाह ने इसका घेरा डाला था। पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में मालवा के महमूद खिलजी का इस पर दो बार अधिकार हो गया। फिर इसे राना ने ले लिया। १६५० में शाहजहां ने इसे किशनगढ़ के राजारूपसिंह को जागीर में दे दिया। बीस वर्ष बाद औरंगज़ेब ने इसे छीन लिया और १७०० ई० में अजमेर जिले में पिसानगांव के राठोर सरदार जुझार सिंह को जागीर में दे दिया। १७०६ में राना अमर सिंह ने इसे फिर छीन लिया। उस समय से यह मेवाड़ राज्य में चला आता है।

मेजा जागीर मेवाड़ के उत्तर में है। इसमें १६ गांव हैं। यहां के रावत प्रथम कोटि के जागीरदार हैं। और चन्द्रावत वंश के सेसोदिया राजपूत हैं। महाजन, ब्राह्मण, गडरी और राजपूत यहां के निवासी हैं। मेजा ही इस राज्य का प्रधान नगर है। यह उदयपुर शहर से ८० मील उत्तर-पूर्व की ओर और मांडल स्टेशन से ६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यहाँ एक छोटा किला और ताल है।

नाथद्वारा जागीर में नाथ द्वारे का नगर और तीस गांव हैं जो राज्य के भिन्न भिन्न भागों में बिखरे हुये हैं। यह जागीर महाराजगुसाईं को महाराना की ओर से मिली हुई है। यहाँ ब्राह्मण, महाजन और भील रहते हैं। इस जागीर के अतिरिक्त गुसाईं महाराज को बड़ौदा, भरतपुर, बीकानेर करौली, कोटा, और दूसरे भागों में गाँव मिले हुये हैं। अजमेर जिले में एक गाँव आरम्भ में दौलत राव सिन्धिया ने एक गांव गुसाईं महाराज को दिया था। इस जागीर की वार्षिक आयु लगभग २ लाख रुपया है। चार वर्ष में चार-पाँच लाख रुपये से मन्दिर में भेंट के रूप में

चढ़ते हैं। महाराज गुसाईं वल्लभ सम्प्रदाय के ब्राह्मणों के शिरोमणि हैं और वल्लभाचार्य के वंशज हैं।

नाथद्वारा नगर बनास नदी के दाहिने किनारे पर उदयपुर शहर से तीस मील उत्तर-पूर्व की ओर है। उदयपुर-चित्तौड़ लाइन के मावली स्टेशन से यह १४ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहाँ डाक-तार घर, स्कूल और अस्पताल है। यहाँ वैष्णव सम्प्रदाय का एक अति पुराना मठ है। श्रीकृष्ण जी की मूर्ति ईसासे १२०० वर्ष पूर्व की है। यह मूर्ति वल्लभाचार्य जी ने १४९५ ई० में मथुरा के एक छोटे मन्दिर में स्थापित की थी। १५१९ में यह गोवर्धन में लाई गई। औरंगज़ेब के अत्याचारों से बचने के लिये वल्लभाचार्य के वंशज मथुरा छोड़कर राजपूताना में आ गये। राना ने इन्हें मेवाड़ आने के लिये निमंत्रित किया। यहाँ सियार गाँव के पास मन्दिर बनाया गया। कालान्तर में मन्दिर के चारों ओर नगर बस गया।

पारसोली जागीर मेवाड़ के पूर्व में स्थित है। इसमें ४० गाँव हैं। यहाँ के राव प्रथम कोटि के जागीरदार और चौहान राजपूत हैं। गूजर, ढाकर, जाट

और राजपूत यहाँ के प्रधान निवासी हैं। पारसोली ही इस जागीरदार का प्रधान नगर है जो उदयपुर शहर से ८४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ डाकघर है। राजनगर इसी नाम के परगने का प्रधान नगर है। यह उदयपुर शहर से ३४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। राजपूत गूजर, ब्राह्मण, और महाजन इस परगने के निवासी हैं। राजनगर को राना राजसिंह ने सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। नगर से १ मील पश्चिम की ओर राजसमन्द (ताल) है जिसे राना ने अकाल पीड़ितों को सहायता देने के लिये खुदवाया था। राजनगर के पड़ोस में संगमरमर की प्रसिद्ध खाने हैं।

रास्भी जिला मेवाड़ के मध्य में स्थित है। इसमें १०० गाँव हैं। रास्मी और गलुंद दो तहसीले हैं। जाट, ब्राह्मण और महाजन इसके प्रधान निवासी हैं। रास्मी इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह १८२३ फुट ऊँची पहाड़ी के पश्चिमी ढाल पर बनास नदी के समीप स्थित है। यह कपासन स्टेशन से १५ मील

उत्तर की ओर है। यहां प्राइमरी स्कूल और अस्पताल है। यहाँ से चार पाच मील की दूरी पर कुंडियन गाँव में कई मन्दिर और मातृकुंड है। कहते हैं इसमें स्नान करने से माता को वध करने वाले परशुराम जी के पाप छूट गये थे। मई मास में यहां मेला लगता है। दूर दूर से यात्री यहां स्नान करने के लिये आते हैं।

सहरन जिला राज्य के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। इसमें २७४ गांव और तीन (सहरन, रायपुर और रेलमगरा) तहसीलें हैं। यहां महाजन, जाट, गूजर, ब्राह्मण और राजपूत रहते हैं। जिले की आय प्रायः १ लाख रुपये है। सहरन इस जिले का केन्द्र स्थान है जो उदयपुर शहर से ५५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है यहां स्कूल, अस्पताल और डाकघर है।

सैरा गांव इसी नाम के परगने का केन्द्र स्थान है। यह उदयपुर शहर से ३३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यह परगना राज्य के पश्चिम में अरावली की पहाड़ियों में स्थित है। इसमें ५८ गांव हैं। लगान प्रायः अनाज में इकट्ठा किया जाता है।

सलूम्बर जागीर मेवाड़ के दक्षिण में स्थित है।

इसमें एक नगर (सलूम्बर) और २३७ गांव हैं। यहां के रावत प्रथम कोटि के सरदार और सेसोदिया राजपूतों के चन्दावत वंश के नेता हैं। यह राना लाखा के बड़े बेटे चन्दा के वंशज हैं। भील, डांगो, महाजन और राजपूत इस के प्रधान निवासी हैं। इस जागीर की आय लगभग १ लाख रुपये है। इनसे दरबार किसी प्रकार का कर नहीं लेता है। इनके पूर्वज चन्दा ने अपने छोटे और सौतेले भाई मोकल के पक्ष में सिंहासन त्याग दिया था। इस वंश के रत्न सिंह खनुआ के युद्ध में १५२७ में बाबर से लड़ते हुये मारे गये। साईदास अपने बेटे के साथ चित्तौड़ की रक्षा करते हुये अकबर के साथ लड़ते हुये १५६७ में मारे गये। इस जागीर में तांबा पाया जाता है। १८७० तक यहां पदुम साही पैस या सलूम्बर भिंगला बनता रहा। इसके बाद ब्रिटिश सरकार की आज्ञा से टकसाल बन्द कर दी गई। सलूम्बर इस जागीर का प्रधान नगर है। यह सोम नदी की सहायक सरनी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह उदयपुर शहर से ४० मील दक्षिण-पूर्व को ओर है। यह एक दीवार से घिरा है। इसके

उत्तर की ओर ऊंची और मनोहर पहाड़ियां हैं। एक पहाड़ी पर किला बना है। रावत का महल पश्चिम की ओर एक झील के किनारे पर है। यहां का दृश्य बड़ा मनोहर है। यहां डाकघर और स्कूल है। सरदार गढ़ जागीर मेवाड़ के पश्चिम में है। इसमें २६ गांव हैं। यहां के ठाकुर प्रथम कोटि के जागीरदार हैं। वे दोदिया राजपूत हैं। महाजन, राजपूत, जाट और बाकर यहां के प्रधान निवासी हैं। वंश परम्परा से यहां के ठाकुर युद्ध के समय महाराना के शरीर की रक्षा करते हैं। इनके पूर्वज (धावल) १३८७ ईस्वी में गुजरात से मेवाड़ को आये थे और तुगलक बादशाह से बदनोर की लड़ाई में लड़ते हुये मारे गये थे। उसके दस उत्तराधिकारी रानाओं के लिये लड़ते हुये मारे गये। सात जी और नाहर सिंह मांडलगढ़ में मारे गये जब महमूद खिल्जी कैद कर लिया गया। कृष्ण सिंह राना रायमल की ओर से मालवा के गयासुद्दीन के विरुद्ध लड़ते हुये मारे गये। करन सिंह खनवा की लड़ाई में १५२७ ई० में मारे गये। भानजी चित्तौड़ के घेरे में १५३४ में मारे गये। सांद १५६७ में चितौड़ के तीसरे घेरे में

लड़ते हुये मारे गये। भीमसिंह १५७६ में हल्दी घाट में राना प्रताप की ओर से लड़ते हुये मारे गये। गोपालदास रानापुर के मन्दिर के पास अरावली की पहाड़ियों में राना अमर सिंह प्रथम की ओर से लड़ते हुये मारे गये। जैसिंह और नवल सिंह भी राना की ओर से मारे गये थे। आगे चलकर सरदार सिंह ने सरदार गढ़ का किला बनवाया। सरदार गढ़ का छोटा नगर बनास की सहायक चन्द्रभागा के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह उदयपुर शहर से ५० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह एक दीवार से घिरा है। उतर की ओर एक पहाड़ी नगर की रक्षा करती है। इसके पड़ोस में एक ताल है जो १८९९—१९०० में अकाल पीड़ित लोगों को सहायता देने के लिये बनवाया गया था।

भील

भील या भिल्ल या निषाद शब्द संस्कृत भाषा का है। इसका अर्थ बध करना या छेदना है। कहते हैं ऋषियों ने रुष्ट होकर अंग के राजा वेन को मन्त्र बल से मार डाला। लेकिन उसके कोई सन्तान न थी। अतः ऋषियों ने उसके शव से लघु काय पुरुष की रचना की जो निषाद कहलाने लगा। उसका रंग कौए के समान काला था। उसके अंग छोटे थे। उसके गालों की हड्डियां उठी हुई थी। उसकी नाक चपटी थी। उसकी आंखें लाल थी। उसके वंशज पहाड़ और जंगल में रहने लगे। इनके बाल बड़े होते हैं और प्रायः वस्त्र का काम देते हैं। यह लोग बड़े ईमानदार होते हैं। धनुषबाण चलाने में बड़े निपुण होते हैं महाभारत में एकलव्य की कथा प्रसिद्ध है ही। एकलव्य नाम का होनहार निषाध गुरू द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीखने के लिये उपस्थित हुआ। कौरव और पांडव राजकुमारों के साथ एकलव्य को शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य न प्राप्त हो सका। अतः उसने गुरू की मूर्ति स्थापित करके उसी के सामने

नियम पूर्वक धनुर्विद्या का अभ्यास आरम्भ किया। अन्त में कुछ वर्षों के अभ्यास के पश्चात् एकलव्य इस विद्या में निपुण हो गया। एक बार एक भूकते हुये कुत्ते को देखकर एकलव्य ने इस वेग और इस सफाई से वाण छोड़े कि कुत्ते का मुह बाणों से ऐसा भर गया कि उसका भूंकना बन्द हो गया। लेकिन उसके मुह में बाणों से ज़रा भी घाव न हुआ। कुत्ता इन सटे हुये बाणों को मुह से बाहर फेंकने में भी असमर्थ था। इस आश्चर्य कर्म को देखकर कौरव और पांडव राजकुमारों को अपने ऊपर लज्जा आई कि वे बिना गुरू के सीखे हुये लव्य से इस विद्या में कितने पिछड़े हुये थे। अन्त में सब के सन्ताप को दूर करने के लिये एकलव्य ने अपना दाहिना अंगूठा काट कर गुरु दक्षिणा में द्रोणाचार्य को अर्पण कर दिया।

भील भारतवर्ष के अति प्राचीन निवासियों में है। यह बन को इतना पसन्द करते हैं कि यह प्रायः बन-पुत्र कहलाते हैं। भील लोग कई वंशों (फिरकों) में बटे हुये हैं। एक वंश के लोग प्रथक पाल (गांवों) में रहते हैं और दूसरे वंश वालों के साथ विवाह नहीं

करते हैं। एक वंश के भील अपने आप को उजला (शुद्ध) कहते हैं। वे प्रायः सफेद चीज़ (जैसे सफेद भेड़ या सफेद बकरा) नहीं खाते हैं। कुछ लोग अपने आप को राजपूतों के वंशज बतलाते हैं और अपने नाम के आगे चौहान, गहलोट, परमार, राठोर आदि लगाते हैं। प्रत्येक वंश और गांव का गमेटी या नेता अलग होता है। कुछ भील पहाड़ियों के समीप मैदान में रहते हैं और खेती करते हैं। कुछ भील पहाड़ी गांवों में रहते हैं और शिकार करते हैं। कुछ एकदम जंगली हैं। जंगली और पहाड़ी भील पहले लूट मार बहुत किया करते थे। यह लड़ने में बड़े वीर थे। इन्होंने राना प्रताप और दूसरे रानाओं के प्रति अपूर्व स्वामि-भक्ति दिखलाई। इनकी सहायता से राना ने वर्षों तक मुग़लों से लोहा लिया।

भील लोग स्वाधीनता प्रेमी, सत्यवादी और अतिथि होते हैं। जो भील भीतरी भागों में रहते हैं वे झूठ बोलना जानते ही नहीं। जो लोग शहरों के सम्पर्क में आते हैं वे प्रायः झूठ बोलना सीख जाते हैं। अपने अतिथि की रक्षा के लिये भील अपना

जीवन तक दे देता है। भीलों में एक बड़ा दोष है कि वे विवाह आदि उत्सवों के अवसर पर शराब पीते हैं। उनके अधिकांश झगड़े शराब के नशे में ही होते हैं। इनकी स्त्रियां बड़ी दयालु होती हैं। उनके पति जिन्हें बन्दी बना लाते थे उन बन्दियों को भोजन आदि देने में भील स्त्रियां बड़ी उदारता दिखलाती थीं। भील प्रायः जादू टोना और भूत पिशाचों में विश्वास करते हैं। अधिकांश भील हिन्दू धर्म को मानते हैं। भील लोग अपने पड़ोस में जंगल पसन्द करते हैं जिससे आपत्ति के समय वे वहां भाग कर छिप सके। इनका घर बांस, मिट्टी या पत्थर का बना होता है। और प्रायः पत्तों से छाया रहता है। इनका गांव पाल कहलाता है। भीलों के सिर पर लम्बे लम्बे बाल रहते हैं इससे शत्रु की तलवार की चोट से कुछ रक्षा होती है। अक्सर लटकते हुये लम्बे बाल कपड़े का भी काम देते हैं। कुछ लोग बालों के ऊपर एक छोटी पगड़ी बांध लेते हैं। कुछ लोग लंगोटी लगाते हैं कुछ धोती पहनते हैं। वे कानों में छोटी बाली पहनते हैं। स्त्रियां लहंगा पहनती हैं। धनी भील धोती के ऊपर अंगरखी

और कमर बन्द पहन लेते हैं। अधिक धनी चांदी का कमर बन्द पहनते हैं। भील लोग धनुष बाण रखते हैं। कुछ भील तलवार और बन्दूक भी रखने लगे हैं। धनुष चिरे बांस से बनाया जाता है। तीर सरकंडे से बनता है। इसके सिरे पर लोहा जड़ (लगा) लिया जाता है। बाण रखने के लिये मज़बूत तरकस भी मज़बूत बांस की खपच्चियों से बनाया जाता है।

स्त्रियां लहंगा दुपट्टा पहनती है। विधवाओं का दुपट्टा प्रायः काला होता है। सधवा स्त्रियां लाख शोशे की चूड़ियां पहनती हैं। उन्हें कांसे के आभूषण बड़े प्रिय हैं। कांस के कड़े और छड़े इतने होते हैं कि वे प्रायः घुटने तक पहुँचते हैं। बालक तेरह चौदह वर्ष तक प्रायः नंगे रहते हैं।

भीलों का साधारण भोजन ज्वार और मक्का की रोटी है। उत्सव के समय वे चावल और बकरे या भैंसे का मांस भी खाते हैं। तभी वे महुआ या बबूल की छाल और शीरे की शराब भी पीते हैं।

भीलों की भाषा हिन्दी और गुजराती के मध्य की है और दोनों से मिलती जुलती है। इनके गीतों को सम-

सहेलियों की बाड़ी

घनघोर घाट

त्रिपोलियां

तोरन
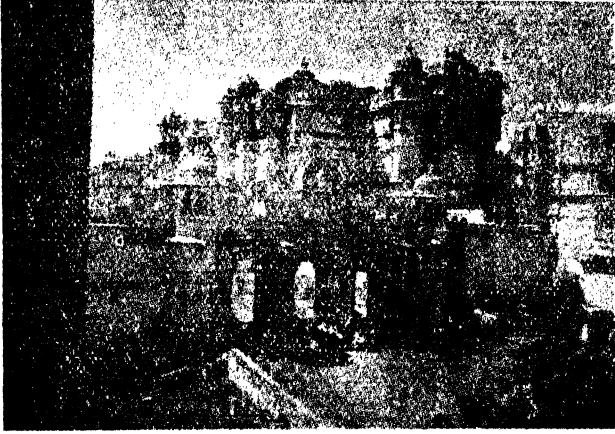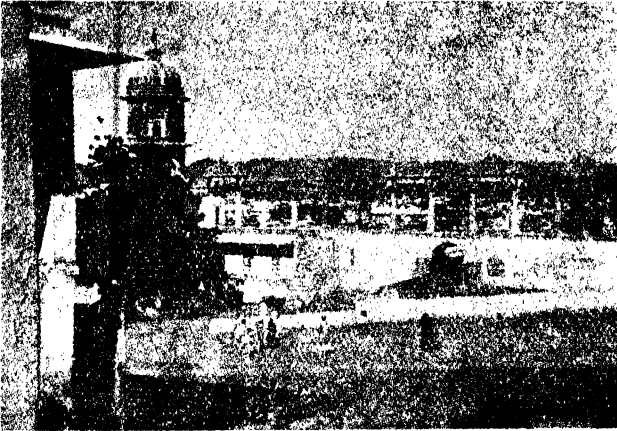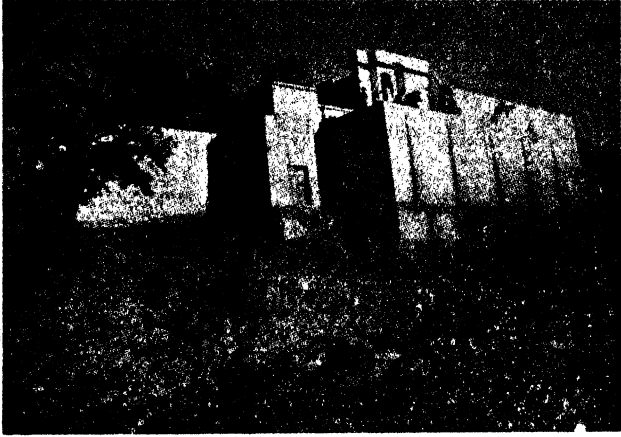
ख़ास ओदी
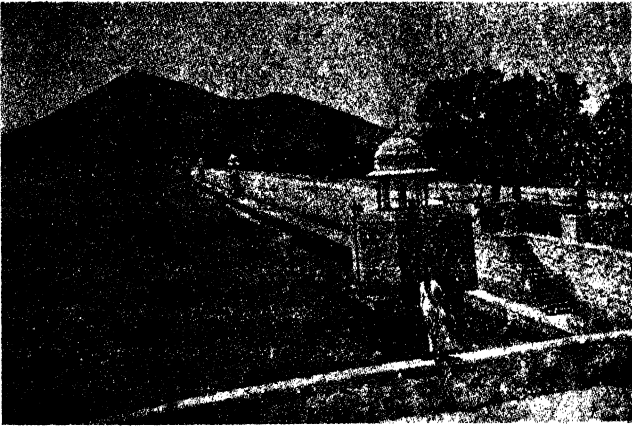
फतेह सागर

राणा प्रताप चेतक पर। यह चित्र शिवाजी के दरबार के एक चित्र की प्रतिलिपि कहा जाता है। मराठों के पतन के बाद मावनी नामक बम्बई के एक सेठ ने मराठे दरबार के चित्र खरीद लिये थे। मावनी के संग्रह के इस चित्रों को भी मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह ने चित्रकार रवि वर्मा से प्रतिलिपि करवाई। प्रतिलिपि अभी उदयपुर दरबार में है और यह फोटो उसी का है।

चित्तौड़गढ़ का घेरा जिसको अकबर ने राणा उदयसिंह से छीन लिया था।

उदयपुर के राना भीमसिंह जी । इन्हीं पर अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था ।

राना सांगा (राजपूताना म्यूज़ियम)

राना सांगा या संग्रामसिंह वीरता की मूर्ति थे। ८० से ऊपर घावों के निशानों से सुशोभित, एक आंख और एक बांह रणचंडी को भेंट कर देने के बाद भी आपने बाबर से लोहा लेने के लिये ८०,००० सिपाही इकट्ठा किये थे।

झना कठिन है। मारवाड़ी में कहावत है। "कैन चारनरी चाकरी कैन अरुनरी राख, कैन भील रोगावनो, कैन साथियारी साख" इसका अर्थ यह है कि चारन की सेवा, अरून वृत्त की राख भील का गाना और साथिया की गवाही (सात्ती) किसी काम की नहीं होती है।

होली, दिवाली और दशहरा भीलों के प्रधान उत्सव हैं। उत्सव के समय मन्ना या गेर में नाचना गाना होता है। ढोल बजाने वाले बीच में रहते हैं। नाचने वाले हाथ में लकड़ी लिये हुए उछल कूद कर चक्कर काटते हैं और लकड़ी आगे पीछे वालों के साथ खटखटाते जाते हैं। उनके झगड़े पंचायत में तय हो जाते हैं। वे अपने संस्कार ब्राह्मणों से कराते हैं। विधवायें फिर विवाह कर लेती हैं।